शोख़ी थी क़यामत तेरी मस्ताना अदा में।
फ़ितनों[1] ने क़दम चूम लिये लग़ज़िशे-पा[2] में॥

शरमाई हुयी चितवनों पर उसकी न जाना।
शोख़ी भी छिपी बैठी है पहलू से हया में॥

बीमारे-मुहब्बत ने कभी मुंह न लगाया।
तासीर खुली जाती है इस ग़म से दवा में॥

इस डर से वह पामाल[3] नहीं करते हैं मुझको।
मिल जाये न दिल पिस के कहीं रंगे-हिना[4] में॥

कहती है शबे-वस्ल यह चितवन की शरारत।
आज आग लगा दूंगी मैं दामने-हया में॥

दिल एक, ख़रीदार हैं दो, खैर हो यारब।
चल जाय कहीं आज न शोख़ी व हया में॥

किस तरह हो न नाज़ हमें इज्ज़[5] पर अपने।
वह चीज़ है जो यह नहीं दरगाहे-खुदा में॥

अहबाब के मातम में कटी उम्र हमारी।
हम साथियों के रोने को उतरे थे सरा[6] में॥

* *

1. उपद्रवों ने 2.पांव की लड़खड़ाहट 3. बर्बाद 4.मेहन्दी का रंग 5. नम्रता 6. सराय

मुमकिन नही कि रूख़ से तेरे हो दो-चार शमा।
चेहरे को आब-ओ-ताब दिखाये हज़ार शमा॥

क्यों सुबह तक है शाम से शब ज़िंदा-वार[1] शमा।
है किसके सोग में हमातन[2] इन्तज़ार शमा॥

आती है उसके कूचये-गेसू से क्या हवा।
बुझ जाती है यह बज़्म में क्यों बार-बार शमा॥

क़िस्सा जो सोज़े-दिल का सुना मुझसे शमा को।
ता-वक्ते-सुबह शब को रही अश्क बार शमा॥

परवानों की हैं लाशें लगन में पड़ी हुई।
रो-रो के क्यों न दिल का निकाले गुबार शमा॥

* *

ज़िन्दा रहने वाला 2. सम्पूर्ण शरीर।

दमे-अख़ीर तो ज़ालिम ज़रा निगाह मिले ॥
कुछ इस ग़रीब मुसाफ़िर को ज़ाद:राह[1] मिले ॥

हमें भी तूर पर मूसा की तरह राह मिले।
कभी तो देखने वालों से भी निगाह मिले ॥

वह बग़ल झाकें जो साया मियाने-राह[2] मिले।
चुरायें आंखें, अगर अक्स से निगाह मिले ॥

मैं हूँ वह काबानशी जाके दैर के दर पर।
पुकारता हूँ कोई बुत, खुदा की राह मिले ॥

मैं अपने नामये-आमाल[3] की बलायें लूं।
जो तुझ से रंग कुछ ऐ गेसूये-सियाह मिले ॥

गुज़रते जोत हैं क्या जल्द वस्ल के दिन रात।
मेरे रक़ीब से शायद हैं महर-ओ-माह मिले ॥

करम करे जो बन्दा निवाज बन्दों पर।
बुतों को ढूढंने निकले, खुदा की राह मिले ॥

"अमीर" मैक़दये-मारफ़त[4] को यूं जाऊं।
कि राह में कोई मस्जिद न ख़ानक़ाह[5] मिले ॥

* *

1. सफ़र का सामान 2. रास्ते में 3. कर्मों की सूचि 4.ईश्वरीय प्रेम का मदिरालय
5. साधुस्थल

मुझको क्या जिसे जब मिलेंगे आप।
वह यह पूछेगा कब मिलेंगे आप॥

हाथ फैला के जो ली अगंड़ाई।
मैं समझा कि अंब मिलेंगे आप॥

जान देने का तब मिलेगा आप।
दिल के मन्दिर में जब मिलेंगे आप॥

आंख से आंख दिल से दिल मिल जाय।
कहिये इस तरह कब मिलेंगे आप॥

ढूढंना है अब्स[1] "अमीर" सबब।
एक दिन बे सबब[2] मिलेंगे आप॥

* *

1. बेकार 2. अकारण

ख़बरदार ऐ मुसाफ़िर ख़ौफ़ की जा[1] राहे-हस्ती है।
ठगों का बैठना है जा-ब-जा चोरों की बस्ती है॥

बहार आई है साक़ी आम फ़ैज़े[2]-मय-परस्ती है।
दर- ओ- दीवार से इस दौर में मस्ती बरसती है॥

तेरी तलवार में जौहर है क़ातिल अब्रे-रहमत[3] के।
गुनाहगारों पर आकर जोश में क्या-क्या बरसती है॥

जो आता है वहां से चीथड़ा तन पर नहीं होता।
अदम में भी इलाही क्या कोई नंगों की बस्ती है॥

बुतों को देख कर हम क़लमये-तौहीद[4] पढ़ते हैं।
खुदा राज़ी है जिसमें वह हमारी बुत परस्ती है॥

तेरी आंखों को क्या तशबीह[5] दूं हम चश्में-आहू से।
वहां शोख़ी ही शोख़ी है यहां शोख़ी व मस्ती है।

नफ़स की आमद-ओ-शुद[6] पर न दम भर ज़िदगानी।
अरे ग़ाफ़िल यही मिक़राज़[7] बहरे-रख़्ते हस्ती[8] है।

"अमीर" इस रास्ते से जो गुज़रते हैं वह लुटते हैं।
मुहल्ला है हसीनों का कि क़ज़्ज़ाकों[9] की बस्ती है॥

* *

1. जगह 2. देन 3. कृपा के बादल 4.ईश्वर के एक होने का मन्त्र 5. उपम
आना जाना 7. कैंची 8.जीवन यापन हेतु 9. डाकू

कभी इसके लब पर कभी उसके लब पर।
ठहरता नहीं पांव चंचल हंसी का॥

यह ओछापन ऐ जख्म अच्छा नहीं है।
कि रोना है अंजाम ऐसी हंसी का॥

कोई उनको छेड़े ज़हे-बदगुमानी[1]।
वह कहते हैं यह काम तो है उसी का॥

निहाले-मुहब्बत[2] मेरा रंग लाया।
वह फूलों में आये यह फल है उसी का॥

"अमीर" इक मुरक्क़ा[3] है यह दारे-फ़ानी।[4]
गम-ओ क़ुलफ़त[5]-ओ-हसरत-ओ-बेकसी का॥

* *

1. कितना अच्छा भ्रम 2. प्रेम की डाल 3. चित्र 4. नश्वर संसार 5. कष्टों का दुख

दाग़ अफ़सुर्दा[1] हो चले दिल के।
झिलमिलाये चिराग़ महफ़िल के॥

हम से सीखे जो तर्ज़े-नाला[2] कशी।
फूल मुंह चुम लें अनादिल[3] के॥

दिल में आकर न दिल से फिर निकले।
तुम वो अरमान बन गये दिल के॥

गमें - को नैन[4] से मुझे क्या काम।
किसी कोने में पड़ रहे दिल के॥

हों जो वाकिफ़ जज़ाये-एहसां[5] से।
हाथ चूमें क़रीम सायल[6] के॥

हाले-दिल दर्द-ओ-दाग़ से पूछो।
यह बड़े राज़दार हैं दिल के॥

पूछते हैं वह मुझ से ईद के दिन।
कहो क्या मिल गया गले मिल के॥

उसकी रहमत से लौ लगा कि "अमीर"।
आड़े आयेगी वक्त मुश्किल के॥

* *

1. मुरझाए हुए 2. रोने का ढंग 3. बुलबुल 4. संसार भर का दुःख 5. एहसान का बदला 6. प्रार्थी।

हमको वज़ीर से न किसकी शाह से ग़रज़।
अल्लाह के .फक़ीर हैं अल्लाह से ग़रज़॥

जलवा पसन्द आपका आशिक़ हूं आपका।
खुरशीद[1] से ग़रज़ न मुझे माह से ग़रज़॥

उठवाइये न मेरे जनाज़े को धूम से।
मरने के बाद क्या हश्म-ओ-जाह[2] से ग़रज़॥

ऐ सामईन[3] हैं शेर मेरे दिल का मर्सिया।
करते हो वाह क्या है मुझे आह से ग़रज़॥

गर्दिश "अमीर" कूचा-ओ-कूचा से इस लिये
निकले किसी तरीक़ा किसी राह से ग़रज़।

* *

1. सूर्य से 2. शान व शौक़त, वैभव्य से 3. श्रोताओं ऐ सुनने वाले

जलवा ख़ालिक़[1] का किस बशर[2] में नहीं ।
ग़ैर अक्स आइने के घर मे नहीं ॥

होश तक राह बेखुदी में है गुम ।
कोई साथी मेरा सफ़र में नहीं ॥

देख ली आज आंख उस गुल की ।
अब तो नरगिस[3] भी कुछ नज़र में नहीं ॥

देखिये तो इंसा में है सब कुछ ।
कौन कहता है कुछ बशर में नहीं ॥

हो सके ख़ाक मेहमानिये-ग़म ।
एक क़तरा लहू जिगर में नहीं ॥

मांगना हो जो मांग लो उससे ।
कौन सी शै खुदा के घर में नहीं ॥

ऐश का नाम ही सुना है "अमीर" ।
ढूंढ मारा जहान भर मैं नहीं ॥

* *

1. प्रभु का 2. व्यक्ति, आदमी 3. एक फूल विशेष

हाले-फ़नायो-दहर[1] से ग़ाफ़िल नही हुबाब[2]।
हर दम को जानता है दमे-वापसी[3] हुबाब ॥

देता है बेसबातिये-अफ़लाक़[4] की ख़बर।
जामे-जहा-नुमा से हमें कम नहीं हुबाब ॥

साहिल पे बहरे-ग़ुस्ल उतारा न पैरहन।
देखे न तुमको आंख बचाकर कही हुबाब ॥

चश्मे-ग़ज़ब से तुम कभी देखो तो क्या अजब।
घबरा के पाय-मौज पे रखदे जबीं[5] हुबाब ॥

है पानी-पानी आंख उठाता नही "अमीर"।
क्या मेरी चश्मे-तर के हुआ शर्मग़ीं[6] हुबाब ॥

* *

1. संसार की नश्वरता 2. बुलबुला 3. मरते समय की सांस 4. संसार की न
5. माथा 6.शरमाई हुई

हर क़दम पर जो यही नाज़ की मूरत होगी।
मै तो क्या तुझ पे फ़िदा तेरी नज़ाक़त होगी॥

दिल तड़पता है लहद[1] में तो यह आता है ख़याल।
यूं ही बेचैन मेरे हिज्र में हसरत होगी॥

उनकी तस्वीर से ऐ दिल न लिपट वरना उन्हें।
तेरे आग़ोशे-तसव्वुर से भी नफरत होगी॥

बे सबब नफ्सकुशी[2] क्या फ़ुक़रा[3] करते हैं।
तर्के लज्ज़त में भी उनको कोई लज्ज़त होगी॥

देख लेगा मेरी हालत जो मुहब्बत में फिर।
कोई कमबख्त ही होगा जिसे उल्फ़त होगी॥

रोज़े-महशर ने दराज़ी[4] यह कहा से पाई।
परदये-हश्र में मेरी शबे-फ़ुर्क़त होगी॥

कभी आयेगा वह दिल में कभी आंखों मे "अमीर"?
यही ख़िलवत[5] मेरी होगी यही ख़िलवत होगी॥

* *

1. क़ब्र 2. इच्छाओं का हनन 3. साधुत्व 4. लम्बाई 5. एकान्त

उसे देखा तसद्दुक़[1] कर दिया दिल।
किसी को क्या तेरी आंखें मेरा दिल॥

तड़प जाता हूं मैं उठता है जब यह।
इलाही[2] दर्द है पहलू में या दिल॥

यह दाग़े-इश्क़ से है इश्क़ मुझको।
समझता हूं इसे मैं दूसरा दिल॥

इलाही एक है किस-किस को दूं मैं।
वहां तो मांगती है हर अदा दिल॥

"अमीर" इस नाज़ से ज़ालिम ने देखा।
निगाहें बोल उठीं वह ले लिया दिल।

* *

1. न्योछावर 2. हे भगवान

मुहब्बत के जो दाग़ डाले हुए हैं।
उभर कर वही दिले में छाले हुए है॥

यह बुत सब मेरे देखे भाले हुए हैं।
तसव्वुर के सांचे में ढाले हुए है॥

कभी ख़ून सौदाइयों[1] का गिरा था।
उछल कर वही क़तरे लाले हुए है॥

बला का बला नोश[2] है दिल हमारा।
ग़में-दो जहां, दो निवाले हुए हैं॥

गिरातें है क्यो बिजलियां, भर के सिसकी।
तड़प कर वह तड़पाने वाले हुये है॥

यूं ही तोड़ने वाले के हाथ टूटें।
बहुत दिल-शिक़स्ता[3] प्याले हुए है॥

न थी कूंचां-गर्दी[4], न सहरा-न वर्दी[5]।
यह रास्ते हमारे निकाले हुए हैं॥

प्याले कहां वस्ल के मैकदे में।
कफ़े-दस्त[6] साक़ी प्याले हुए हैं॥

* *

1. उन्मादियों को 2. शराबी 3. टूटा हुआ दिल 4. गलियों में घूमना 5. जंगलों में घूमना 6. हाथ की हथेली

हमसे दिल दर्दे-मुहब्बत का दुखाया न गया।
जख्म खाया किये टांका कभी खाया न गया॥

कितना नाज़ुक था दिले-ज़ार[1] कि पज़मुर्दा[2] रहा।
रंग का बोझ भी इस गुल से उठाया न गया॥

क़ैस[3] की ख़ाक उड़ाने को हवा आंधी थी।
पर्देये-महमिले-लैला[4] को उठाया न गया॥

बज्मे-ग़म में मुझे क़िस्मत ने बनाया है चिराग़।
किसका मेहमान हुआ मैं कि जलाया न गया॥

तेग़े-क़ातिल[5] कभी है क्या चश्मये-बेफ़ैज़ "अमीर"।
कोई क़तरा किसी प्याले को पिलाया न गया॥

* *

1. दुःखी हृदय 2. बेजान, अधमरा 3. मजनूं 4. लैला के चेहरे का झीना आवरण
5. क़ातिल की तलवार 6. बेकार का झरना

था ध्यान में नक्शा जो तेरी जलवा गरी का।
मुंह फेर लिया देख के रूख़ हमने परी का॥

हर सुबह को यह शोर है मुर्गे-सहरी[1] का।
चौंको की ज़माना न रहा बेख़बरी का॥

देता है ख़बर पर ख़बर अहबाब[2] का उठना।
परदा नहीं उठता है मगर बेख़बरी का॥

मस्ती में कहीं देख ली उस माह की रफ्तार।
बहता हुआ पड़ता है क़दम कुबक दरी[3] का॥

याद आता है गुलज़ार में उस गुल का वह सोना।
आना वह दबे पांव नसीमें-सहरी[4] का॥

डर है यह ख़बर उड़ के न सैयाद को पहुंचे।
अच्छा नहीं चर्चा मेरी बेबालो-परी[5] का॥

कुछ रोज़ अभी सब्र कर ऐ पंजये-वहशत[6]।
बे-मौसमें-गुल लुत्फ़ नहीं जामा दरी[7] का॥

घबरा के चले आये मेरे घर वे "अमीर" आज।
अहसान हुआ मुझपे मेरी बेख़बरी का॥

* *

1. सुबह को बोलने वाला मुर्गा 2. मित्रवर 3. प्रातःकालीन हवा 4. कबूतरी जैसी चाल 5. बाल व पर 6. उन्मादता का हाथ 7. कपड़ा फाड़ना

नाविके-नाज़[1] से मुश्किल है बचाना दिल का।
दर्द उठ-उठ के बताता है ठिकाना दिल का॥

लोट जाते थे हसीं देख के आना दिल[2] का।
क्या मुआफ़िक़ था जवानी में ज़माना दिल का॥

इश्क़ में सब्र कहां, ज़ब्त कहां, ताब कहां।
जान जाना नहीं हमदम यह है जाना दिल का॥

जी लगे आपका ऐसा की कभी जी न भरे।
दिल लगा कर जो सुने आप फ़साना दिल का॥

मशरबे-इश्क़[3] में कैसी है यह उल्टी बातें।
दिल के जाने को यह क्यो कहते है आना दिल का॥

* *

1. तीर के समान अदाएं 2. आसक्त होना 3. प्रेम के धर्म में

दिल है दुश्मन न बग़ल में इसे पाले बुलबुल।
किसी गुलचीं को करे जाके हवाले बुलबुल॥

नौ-गिरफ्तार सैय्याद का समझे तो मिज़ाज़[1]।
थोड़ी-थोड़ी अभी आवाज़ निकाले बुलबुल॥

खुश-बयानी है तेरी सारे चमन में मशहूर।
कुछ तो सैयाद को बातों में लगाले बुलबुल॥

तेज़ चलती है हवा फ़स्ले ख़िज़ां[2] आ पहुंची।
अपने आग़ोश में फलों को छिपाले बुलबुल॥

आख़िर इक़रोज़ ख़िज़ां है कि तिलस्मी[3] है बहार।
चार-दिन रंग-गुलिस्तां मे ज़मा ले बुलबुल॥

ध्यान सैयाद का गुलचीं का ख़तर[4] ख़ौफ़े-ख़िज़ां[5]।
हो बला एक तो सर से उसे टाले बुलबुल॥

आशिक़ इक गुल का हूं जाता हूं चमन में मैं भी।
इस तवक्को[6] पे कि कुछ दर्द बटा ले बुलबुल॥

नामुआफ़िक़ है हवा इससे गुलिस्तां की "अमीर"।
आशियाने से कहो सर न निकाले बुलबुल॥

* *

1. स्वभाव 2. पतझड़ का मौसम 3. जादुई 4. ख़तरा 5. पतझड़ का भय 6. आशा

तूर[1] पर हमसा अगर देखने वाला होता।
देखते बर्क़े - तजल्ली[2] को संभाला होता॥

और सामान जूनूं में हमें दरकार नहीं।
कोई नश्तर कोई कांटा कोई छाला होता॥

क्या बला झूम के घनघोर घटा आई है।
हाय इस वक्त मेरा गेसुओं वाला होता॥

लज्ज़ते - दाग़े - मुहब्बत[3] से जो होता आगाह।
होती हर फूल को हसरत कि मैं लाला[4] होता॥

लुत्फ़ हसरत की निगाहों का तो जब था कि "अमीर"।
इन निगाहों का कोई देखने वाला होता॥

* *

1. एक पवित्र पहाड़ का नाम 2. ईश्वरीय ज्योति 3. प्रेम का आनन्द 4. एक
का नाम

दबा पाया जो है हमको तो यह भी ज़ुल्म करते हैं।
हमारी क़ब्र के तख़्ते भी अब हम से बररते हैं॥

अदम के जाने वाले रास्ते में कब ठहरते हैं।
जहां यह निकले घर से जाकर मंज़िल पर उतरते हैं॥

अजब पर्दा है, पर्दा शर्मे-इसियां[1] का दमे-आख़िर।
इसी पर्दे में सारी उम्र के बिगड़े संवरते हैं॥

मरीज़े-इश्क़ ने पहलू तहो-तुरफ़ा[2] तमाशा है।
हुए बीमार तो हम और परहेज आप करते हैं॥

तसल्ली दिल को हम देते हैं कैफ़े-चश्मे-साक़ी[3] से।
शराबे-हुस्न लेकर इश्क के साग़र में भरते हैं॥

चले ही जाते हैं पैके-नफ़स[4] इक उम्र गुज़री है।
न मंज़िल है कहीं इनकी न रस्ते में ठहरते हैं

न इतना मुहतसिब[5] का ख़ौफ़ है हमको न क़ाज़ी का।
कहीं तौबा न मैख़ाने में आये हम उनसे डरते हैं॥

मुग़न्नी[6] की न मैख़ाने में हाजत है न मुतरिब[7] की।
शिकस्ते-तौबा की आवाज़ पर हम वज्द करते हैं॥

* *

1. पापों की लाज 2. पूरी तरह से बचना 3, मदिरापान कराने वाले की आंख
4. सांसों के तीर 5. पवित्र व्यक्ति 6. गायक 7. गायक

मौक़ूफ़[1] जुर्म ही पे करम का ज़हूर[2] था।
बन्दे अगर क़सूर न करते क़सूर था॥

ऐ बर्क़े हुस्ने-यार यह अच्छा ज़हूर था।
दीदार को कलीम[3] थे जलने को तूर था॥

हम क्या कि मयकदे में तेरे जामे-चश्म से।
जो शीशा था वह शीशा मस्ती से चूर था॥

इज्ज़-ओ-नयाज़[4] इधर तो उधर था ग़रूर-ओ-नाज़।
जितने थे हम क़रीब वो उतना ही दूर था॥

किस-किस को रोकता शबो-फुरकत कि मैं तो एक।
और जान बेक़रार दिले-नासुबूर[5] था॥

* *

1. निर्भर 2.प्रदर्शन 3. बैचेन 4. नम्रता 5. बेसब्रा हृदय

इक उम्र हो गई कि अक़ामत[1] सफ़र में है ।
नक़्शा मगर वतन का अभी तक नज़र में है ॥

जो ख़ूं उबल चले वह मेरी चश्मे - तर में है ।
जो दाग़ रंग लाये वह मेरे जिगर में है ॥

दिन - रात याद है दुरे - दंदाने[2] यार की ।
क़श्ती हमारी उम्र की आबे - गुहर[3] में है ॥

नैरंगियां तसव्वरे - कामिल[4] की देखिये ।
तस्वीरे - यार दिल में है नक्शा नज़र में है ॥

मरता है उस पे ग़ैर भी तो मैं हूं बेक़रार ।
दुश्मन के दिल का दाग़ भी मेरे जिगर में है ॥

दुनियाये - बेसबात[5] में क्या हो हमें सबात[6] ।
जिस घर में हम मुक़ीम[7] वह घर ही सफ़र में है ॥

यारब "अमीर" के भी गुनाहो से दर - गुज़र[8] ।
यह भी तो आख़िर उम्मते -ख़ैरूलबशर[9] में है ॥

* *

1. ठहरना 2. मोती जैसे दांत 3. मोतियों की चमक 4. पूर्ण कल्पना 5. नश्वर संसार 6. ठहराव 7. रुका हुआ 8. भूल जाना 9. मानव परिवार

रुतबा शहीदे - इश्क़ का गर जान जाइये।
क़ुर्बान जाने वाले पे क़ुर्बान जाइये॥

अच्छी नहीं इताअते - आशिक़[1] की आदतें।
कहना रक़ीब का न कहीं मान जाइये॥

कहते हैं घर मेरा कोई हसरत - कदा[2] नहीं।
साहब यहां न छोड़ के अरमान जाइये॥

हम को तो कोई हाय कहीं पूछता नहीं।
पूछे तो लाख मर्तबा मेहमान जाइये॥

ख़िलवत[3] में उसकी दिल को तो ले जाइये "अमीर"।
पर दिल में न लेके कोई अरमां जाइये॥

* *

1. कहना मानना 2. इच्छाओं का घर 3. एकान्त

नशा - ए - ऐश मुझे गर्दिशे - अय्याम[1] में है।
बे पिये दर्द अगर है तो मेरे जाम में है॥

दिल से मेरे कि ज़बां से तेरे पूछे कोई।
ग़ैर क्या जाने मज़ा क्या तेरे दुश्नाम[2] में है॥

आंख ख़ाली न दिखा लुत्फ़ भी कर ऐ साक़ी।
जाम ही जाम है या मय भी कहीं जाम में है॥

यादे - गेसू से कहां जोशे - जुंनू में आराम।
मैं तो हूं आज़ाद तो क्या रूह मेरी दाम[3] में है॥

मुर्ग़े-दिल ख़ाक फंसे ज़ुल्फ पर अफ्शा[4] छिड़को।
दाम ही दाम है दाना भी कहीं दाम में है॥

है लड़कपन में बजा ख़ाक से इंसान को उन्स।
आक़िल[5] आग़ाज़ सके अंदेशये - अंजाम[6] में है॥

* *

1. समय चक्र 2. गालियां 3. जाल में 4. सिन्दूर, एक प्रकार की चमकी 5. बुद्धिमान 6. परिणाम की चिंता में

सबा को यह क्या मौज आज आ गई।
कि फूलों से तुरबत[1] मेरी छा गई॥

जहां से मुझे लाई थी मेरी उम्र।
वहीं सैर दिखला के पहुंचा गई॥

सितम लिज़्ज़ते - नेस्ती[2] ने किया।
मुझे मेरे हाथों से मिटवा गई॥

वह बीमार बेकस हूं मैं नातबा[3]।
तड़प आके करवट बदल वा गई॥

बड़ी बेवफ़ा उम्रे - रफ्ता थी हाय।
मुसाफ़िर को रास्ते में लुटवा गई॥

* *

1.समाधी 2.मरणेच्छा 3.दुर्बल

गुज़श्ता[1] ख़ात नशीनों की यादगार हू मैं।
मिटा हुआ सा निशाने - मज़ार हू मैं॥

ग़रीब चाहने वालों में तेरे यार हू मैं।
दिमाग़ अर्श पे ज़ाहिर में ख़ाकसार हू मैं॥

तेरे करम में कभी कुछ नहीं, करीम है तू।
मेरा कसूर है झुठा, उम्मीदवार हूं मैं॥

पड़ा है दस्ते - अजल[2] मुझ पे लाख बार मगर।
निकल गया हूं तड़पकर वह बेक़रार हूं में॥

कुछ आज मैंने नई पी है हज़रते-वाअज़[3]।
अजल का मस्त पुराना शराब ख्वार हूं में॥

निगाहें - करम से मुझको न देख ऐ दौज़ख़[4]।
ख़बर नहीं तुझे किसका गुनाहगार हूं मैं॥

ज़मीने - क़मरे - सलाता[5] से आ रही है सदा।
कि आज मंज़िले-इशरत[6] हूं, कल मज़ार हूं मै॥

फिर उसका शाने - करीमी[7] के हौसले देखे।
गुनाहगार यह कहदे, गुनाहगार हूं मैं॥

* *

1. पहले के 2. मृत्यु का हाथ 3. उपदेशक महोदय 4. नर्क 5. राजाओं के महल से 6. सुख स्थल 7. कृपा दृष्टि

दामनों का न पता है न गरेबानों का।
हश्र कहते हैं जिसे शहर है उरियानों[1] का॥

घर है अल्लाह का घर बे सर - ओ - सामानों[2] का।
पासबानों[3] का यहां काम है न दरबानों का॥

ख़ातिर-ओ-रंज-ओ-ग़म-ओ-दर्द से फुर्सत ही नहीं।
मेज़बां[4] होके हुआ मैं इन्हीं मेहमानों का॥

ग़ौर .कसरा - ओ - फ़रीदूं[5] पे जो पहुंचू, पूछू।
तुम यहां सोते हो क्या हाल है ईवानों[6] का॥

कौन गुले - चेहरये - रंगी का नहीं दीवाना।
बाग़ - गुंचा है तेरे चाक़ - गरेबानों का॥

मेरे आज़ा ने फंसाया है मुझे इसियां[7] में।
शिकवा आँखों का करूं या मैं गिला कानों का।

* *

1. नंगे लोगों का 2. जिनके कुछ न हो 3. रखवाले 4. जिनके घर आ आए हों 5. बड़े-बड़े लोग 6. महल 7. पाप

वह बन-सवर के उधर आते है जफ़ा के लिये।
मज़े हैं आज दिले-दर्दे-आशना के लिये॥

मज़ाज[1] में भी है अपनी नज़र हक़ीक़त पर।
बुतों की राह में फिरते हैं हम ख़ुदा के लिये॥

ख़ुदा की शान जो शोख़ी से आशना[2] ही न थी।
तरस रही है वही आंखे अब हया के लिये॥

दिखाऊंगा शबे-रस्ल उनको फूल दाग़ों के।
लगा रहा हूं ये डाली एक आशना के लिये॥

निगाहे-लुत्फ़ भी ख़ाली नही ज़ुबा न चले।
किसी अदा को तो रख छोड़िये हया के लिये॥

ये किसके वस्ल की है आरज़ू कि यास की अब।
दुआये माग रही है मेरी दुआ के लिये॥

"अमीर" काबे को जाता हूं मै तो दैर से बुत।
पुकारते हैं इधर भी ज़रा ख़ुदा के लिये॥

* *

1. बनावट 2. परिचित

गौर[1] में भी ख़लिश - ख़ारे - मुहब्बत है वही।
आज तक दिल में खटकती हैं बराबर पलकें॥

असर सोज़े - मुहब्बत[2] ने दिखाया ए जाज़[3]।
बह गया आंख से दरिया न हुई तर पलकें॥

अहले - बीनश[4] को बहुत सैरे - जहां ख़ूब नहीं।
मर्दुमे - चश्म[5] से कहती हैं यह झुक कर पलकें॥

ऐब अपनों का नहीं है सबब कुल्फ़ते-दिल[6]।
लाख उड़े गर्द नज़र हों न मुक़द्दर पलकें॥

आज आंखों को जवानी में यह ज़ेवर है "अमीर"।
गिर के हो जायेंगी कल ख़स के बराबर पलकें॥

* *

1. कब्र 2. मुहब्बत की जलन 3. जादू 4. देखने वाली आंख 5. आंख पुतलियां 6. हृदय की जलन।

इस शान से हम आये तेरी जलवा - गाह में।
मशाल दिखाई बर्क़े - तजल्ली[1] ने राह में॥

अंधेर कर रही है यह चश्मे - सियाह[2] में।
शोख़ी को क़ैद कीजिए नीची निगाह में॥

वह दुश्मनी से देखते हैं देखते तो हैं।
मैं शाद हूं कि हूं तो किसी की निगाह में॥

हम मस्त मय भी पीते हैं तो कांपते हुये।
तौबा पड़ी हुयी है हमारे गुनाह में॥

उस्तादगी में भी मुझे मेराज़[4] है नसीब।
ठोकर भी खाई है तो मुहब्बत की राह में॥

फूंका इधर उदू[5] को उधर आसमान को।
दो जालिमों की ली है ख़बर एक आह में॥

आंख अपनी फ़ितना-हाय-क़यामत[6] पे क्या पड़े।
जिसके यह फ़ितने हैं वह है अपनी निगाह में॥

* *

1.सौन्दर्य ज्योति 2. दुःखों की रात 3. दिन का काला पर्दा 4. प्रतिष्ठा 5. शत्रु 6. प्रलय के उपद्रव

वह रूख़-ओ-ज़ुल्फ़ न पढ़ पाये यह मुमकिन ही नही।
हाय राते भी क़यामत है फ़क़त दिन ही नही॥

रंग पीरी[1] में जवाना के हों मुमकिन ही नही।
फूलने - फलने के अब दिन ही नही सिन[2] ही नही॥

दौरे -फ़ानी[3] में पता उसका मैं किससे पूछू।
सब हैं परदेशी यहां का कोई साकिन[4] ही नही॥

तेगे - क़ातिल है खिंची मुझसे अजल रूठी है।
किस का अहसान उठाऊं कोई मुहसिन[5] ही नही॥

बे जगह शाम हुयी जाती है जंगल में "आमीर"।
हाय क्या पहुंचेंगे मंज़िल पे कि अब दिन ही नही॥

* *

1.वृद्धावस्था 2. आयु 3. नश्वर संसार 4. निवसी 5. एहसान करने वाले

वस्ल हासिल है मगर है ग़मे-हिज्रां[1] अब तक।
जमा सामान है पर दिल हद परेशां अब तक॥

थक चुके पर है सिरे सैरे - बयाबां[2] अब तक।
वही कांटे है, वही गोशये - दामा[3] अब तक॥

कैंद से दश्त[4] में आये हुये मुद्दत गुज़री।
शौक में मेरे खुला है दरे जिन्दा[5] अब तक॥

पीरी आई हुये सब मुये-सियह[6] सर पे सफ़ैद।
सुबह होती नहीं लेकिन शबे-हिज्रां अब तक॥

उम्र गुज़री है कि हों मुन्तज़िरे-रोज़े-विसाल[7]।
नही आता है वह गर्दिशे-दौरां अब तक॥

उम्र गुज़री है इलाही, अज़ल आती है न यार।
कोई मुश्क़िल मेरी होती नहीं आसां अब तक॥

* *

1. विरह का दु:ख 2. जगल की सैर 3. आंचल का कोना 4. जंगल 5. बन्दीगृह का द्वार 6. काले बाल 7. मिलन की प्रतिक्षा का दिन

बख़्त ऐसे कहां हैं जो करूं यार से बातें।
करता हूं मैं शब भर दर-ओ-दीवार से बातें॥

क्या समझे हम उस आंख का ईमां सूए-नरगिस[1]।
बीमार ने की राज़ की बीमार से बातें॥

ठीक उनके न वादे हैं न ठीक उनकी मदारात[2]।
दो - चार से घातें हैं तो दो - चार से बातें हैं॥

डरता है यह बहशी अभी आवाज़ से तेरी।
सैयायाद न कर मुर्ग़े - गिरफ्तार[3] से बातें॥

क्या ध्यान "अमीर" आया कि वह हट गये पीछे।
झुक - झुक के हम जो करने लगे प्यार से बातें॥

* *

1. नरगिस नामक एक फूल की ओर 2. ख़ातिर 3. फंसा हुआ पंछी

फ़िराक़े - यार में शब हो कि दिन तमाम नही ।
जो उसकी सुबह नहीं है तो उसकी शाम नहीं ॥

मिलती है दुख़्तरे - रज़[1] लड़ झगड़ के काज़ी से ।
जिहाद[2] करके जो शौहरत मिले हराम नहीं ॥

वह गाली देते हैं शिकवा करो तो कहते हैं ।
किसी का ज़िक्र नहीं है किसी का नाम नहीं ॥

गिरह से कुछ नहीं जाता है पी भी ले ज़ाहिद ।
मिले जो मुफ्त तो काज़ी को भी हराम नहीं ॥

ज़माने भर में पड़ी है पुकार हातिम की ।
दिया है जिसने कि हारिम[3] को उसका नाम नहीं ॥

जो मैंकशी से हो फ़ुर्सत तो दो घड़ी को चलो ।
"अमीर" मस्जिदे - जामा[4] में आज ईमाम[5] नही ॥

* *

1. मदिरा 2. लड़ाई 3. एक व्यक्ति विशेष का नाम 4. जामा मस्जिद 5 सर्वोच्च गुरु

क़ाबिले - उफ़ु[1] में आलूदये - इसियां[2] हो लूं।
ऐ अजल सब्र कर इतना कि पशेमां हो लूं॥

फिर वही मैं हूं वही जामा दरी[3] वहशत मे।
पहले वाअज़ से ज़रा दस्ते - गरेबां हो लूं॥

फिर से पुतली ने दमे-नज़अ[4] कहा क़ाविल से।
मरते - मरते तेरे हाथों पर मैं कुर्बा हो लूं॥

अभी ले चल न गुलिस्ता से फंसा कर सैय्याद।
हम सफ़ीरों[5] में ज़रा रह के खुशहाल हां होलूं॥

क़द्र राहत की पसे-रंज है दुनियां में "अमीर"।
तब चलूं बाग़ को जब क़ैदिये - जिंदा[6] हो लूं॥

* *

1. क्षमा योग्य 2. पापों में लिप्त 3. कपड़े फाड़ना 4. मरते समय 5. सहया साथी क़ैदी 6, बन्दीगृह के क़ैदी

ज़ौक़े - मैनोशी[1] बढ़ाती है घटा बरसात की।
और ले उड़ती है मस्तों को हवा बरसात की॥

शोख़ियां हैं दुख़्ते-रज़[2] काय या कि बिजली की चमक।
बोतलें हैं मय की या काली घटा बरसात की॥

मैकशों के दिल में दाग़ आंखों में साक़ी के खुमार।
यह निशानी रह गई है जा-ब-जा बरसात की॥

रंग में डूबे हुये हैं ना - उरूसाने - चमन[3]।
पत्ते - पत्ते से टपकती है अदा बरसात की॥

साक़िया जाम - ओ - सूबू से ऐसी आराईश[4] बढ़े।
आके मयख़ाना पे सिद्के हो, घटा बरसात की॥

हर रविश[5] पर हो चमन में इक परी साग़र-बक़फ़[6]।
एक दिन यूं देखे ऐ साक़ी फ़िज़ा बरसात की॥

हिज्र में सब वे - बजा है वस्ल में सब बा मज़ा।
फ़स्ल गरमी की हो या जोड़ की, या बरसात की॥

* *

1. मदिरापान का शौक़ 2. मदिरा 3. बाग़ की नई दुलहने 4. सजावट 5. क्यारी 6. हाथ में प्याला लिए

मुफ़त यह किसकी जान लेते हैं।
दे के मुंह में ज़ुबान लेते हैं॥

आज़माईश में जान लेते हैं।
ख़ूब आप इम्तहान लेते हैं॥

पीर[1] होते हैं जो शबाब के बाद।
गीर दे कर कमान लेते हैं॥

नहीं साक़ी यह कुलकुले-मीना[2]।
हिचकियां नीम जान[3] लेते हैं॥

हो के बर्बाद तेरे ख़ाना-ख़राब।
लामकां में मकान लेते हैं॥

* *

1. बूढ़ा, वृद्ध 2. बोतल से मदिरा के गिरने की आवाज़ 3. अधमरा

सादगी में तेरी शोख़ी की है रंगत कैसी।
शर्म के साथ है आंखों में शरारत कैसी॥

चलती है तेरी रफ्तार के पीछे-पीछे।
दब गई एक ही ठोकर में .कयामत कैसी॥

वाअज़[1] इतना तो समझ ले कि वह ज़ाते-रहीम[2]।
गये मुजरिम हीं जहन्नुम को तो रहमत कैसी॥

चौकने ही नहीं देती हैं कि सोंचू अंजाम।
आंख खुलते ही सुला देती है ग़फ़लत[3] कैसी॥

चलने वाले तेरे क्या जाने तेरी बज्म का लुत्फ़।
क्या ख़बर दो ज़ख़ियों[4] को, है जन्नत कैसी॥

सर पटकता हूं मैं करवट नहीं लेती ग़ाफ़िल।
पांव फैलाये हुये सोती है क़िस्मत कैसी॥

बात करने की तो मुहलत नहीं मिलती हैं अमीर" ।
ऐसी हालत में ग़ज़ल कहने की फ़ुर्सत कैसी॥

* *

1. उपदेशक 2. कृपालु ईश्वर 3. बेसुधी 4. नरक वासियों को

मुंह दिख दो जो हम नदीदों[1] को ।
तो जिला लो अज़ल रसीदों को ॥

तू वह बुत है जो काबे जा निकले ।
बुत बना दे खुदा - रसीदों[2] को ॥

और तो आसरा नहीं कोई ।
यास है आस ना उम्मीदों की ॥

जितने बुत हैं यहां वह जन्नत में ।
सब मिलेंगे खुदा रसीदों को ॥

कुफ्ले -ख़ातिर[3] तो क्या खुलेगा "अमीर" ।
आज मौत है हम कली दों[4] को ॥

* *

1. जिन्होंने ने न देखा हो, अभागा 2. ईश्वर तक पहुंचना 3 . मन रूपी ताला 4. कुन्जियां

दौड़ा दिल उसकी ज़ुल्फ़े - सियहफ़ाम[1] की तरफ़ ।
यह सैद आप खिंच के गया दाम की तरफ़ ॥

दिल दीजिए तो ढूंढ के माशूक़ बावफ़ा ।
आग़ाज़ में नज़र रहे अन्जाम की तरफ़ ॥

दर पेश२ है वतन से सफ़र छूटता है घर ।
हसरत से देखता हूं दर - ओ - बाम की तरफ़ ॥

साक़ी यह हिज्रे - यार में दिल से किया है अदब ।
देखूं न आंख उठाके मय-ओ-जाम की तरफ़ ॥

वह बदनसीब हूं जो शिक़ायत करूं कभी ।
तक़दीर बोले गर्दिश - अय्याम[3] की तरफ़ ॥

उस आंख के जो देखने वाले हैं बाग़बां ।
कब देखते हैं नरगिस-ओ-बादाम[4] की तरफ़ ॥

* *

1. काले बालों की ओर 2. सम्मुख 3. समय चक्र 4. एक फूल एंव सूखे फल का नाम

मस्जिदों मे न बे महल बैठो।
ज़ाहिदो[1] मैकदे मे चल बैठो॥

दर्द कहता है मुझसे कह कह कर।
देखो उठता हूं मैं संभल बैठो॥

बज्मे - मातम[2] किसी की सूली है।
दो क़दम पर तो घर है चल बैठो॥

यादे - अहबाबे - रफ्ता[3] कहती है।
किसी तकिये में अब तो चल बैठो॥

वह जो उठते हैं फ़ितने कहते हैं।
है तुम्हीं से चहल-पहल चल बैठो॥

* *

1. परहेज़गारो, साधुओं 2. दुःखों का घर 3. गये हुए मित्रो की याद

दाग़ - अये - बहार जैसे हमाहे बदन में हैं।
इस रंग - ओ - बू[2] के फूल भी तेरे चमन में हैं॥

नाला ज़रा करें तो समझ - बूझ कर करें।
बुलबुल से कोई कहदे कि हम भी चमन में हैं॥

सीनों में आशिकों के कहां आशिक़ों के दिल।
कुछ ज़ुल्फ़ में है, कुछ तेरे जाने-ज़क़न [2]में हैं॥

थोड़ा सा लुत्फ और भी ऐ पंजये-असीर[3]।
दो - चार तार और भी पैराहन[4] में हैं॥

हों आबदीदा[5] दर्द की बातें न सुन के आप।
पहलू हज़ार तरह के अपने सुखुन में हैं॥

प्यासे हैं आधे ख़ंजरे - .कातिल की देर से।
जितनी रगें -"अमीर" हमारे बदन में हैं॥

* *

1. रग व गंध 2. कुएं की भांति ठुड्डी 3. बन्दी के हाथ का पंजा 4. लिबास
5. रूआंसे

असमत[1] यह तुमसे कहती है अब तुम छिपा करो।
नामे - खुदा जवान हुए हो हया करो॥

चलते हो साथ मेरे जनाज़े के है यह ख़ौफ़।
ऐसा न हो लहद[2] पे क़यामत बपा करो॥

मुश्किल है उससे हज़रते-दिल यूं तो रस्म-ओ-राह।
पहले तुम अपने दर्द से दिल आशना करो॥

कहते हैं बज्म में तो तुम्हारा यह रंग है।
तनहा जो मुझको पाओ तो क्या जाने क्या करो॥

क्या क़द्र है फ़सानये - उल्फ़त[3] की वां "अमीर"।
कहते हैं हम सुने न सुने, तुम सुना करो॥

* *

1. प्रतिष्ठा 2. क़ब्र 3. प्रेम कथा

किया आरिफ़[1] मुझे पीरे - मुग़ां ने एक प्याले में।
करामत यह नहीं देखो किसी अल्लाह वाले में॥

मज़े जितने थे बागे - दहर[2] में सब चुन लिये दिल ने।
न ऐसा जख्म है गुल में न ऐसा दाग़ लाले में॥

हज़ारों ख़ार प्यासे वादिये - उल्फल में है यारब।
पीलाऊं किसको - किसको बूंद भर पानी है छाले में॥

इधर भी एक निगाहे- लुत्फ़ खुम की ख़ैर ऐ साक़ी।
हमें भी एक चिल्लू मय किसी टूटे प्याले में॥

तड़पते उम्र गुज़री यार आये या अज़ल आये।
खुदाबन्दा कोई तासीर[3] तो पैदा हो नाले में॥

चमन से ख़ानये - सैय्याद[4] तक ज़िन्दा न पहुंचूगा।
कि दम अटका है नरगिस में तो जान अटकी है लाले में॥

* *

. साधु 2. संसार रूपी उपवन 3. असर 4. शिकारी का घर

तेरे कुर्बान ऐ बेताबिये-दिल।
मुझे पहुंचा दे उसके आस्तां[1] तक॥

बहुत ही ज़ौर पर है वस्ल का शौक़।
नज़ाकत आड़े आयेगी कहां तक॥

मैं वह दिल-सोख्ता[2] हूं इस चमन में।
जले बिजली जो आये आशियां तक॥

जो यूं आने न दे उसकी गली में।
तो पहुंचू ख्वाब बन कर पासबां तक॥

तड़पने से मेरे तंग आके बोले।
तसल्ली दे कोई तुझको कहां तक॥

* *

1. चोखट 2. दिलजला

हाय वह दिन की गुज़र जाती थी शब बातों में।
अब न बातों में मज़ा है, न मुलाक़ातों में॥

कुछ रूखाई के सिवा बात नही बातों मे।
लुत्फ़ क्या आये तक़ल्लुफ़ की मुलाक़ातों में॥

आ गया गैर की सुहबत[1] का असर बातों में।
और कुछ आ ही गये तुम बैठ के बदजातों[2] में॥

जब कहा नाला-ओ-ज़ारी[3] मेरी देखो बोले।
बिजली हमने बहुत देखी हैं बरसातों में॥

वस्ल में ज़ुल्फ़े-सियह ने जो किया है अन्धेर।
यह अंधेरा तो न था हिज्र की भी रातों में॥

बुत न बोलें जो नहीं बोलते हैं हमसे "अमीर"।
अपने अल्लाह से बातें हैं मना ज़ातों[4] में॥

* *

मेल-मिलाप 2. नीच प्रवृति के लोग 3. रोना-चिल्लाना 4. प्रार्थनाएं

मार ही डालते है गेसुओं वाले दिल को।
पेच पर पेच है अल्लाह बचा ले दिल को॥

हूं मैं बेकस कोई हमदम है न ग़मख्वार मेरा।
दर्द ही उठ के संभाले तो संभाले दिल को॥

नाविके - नाज़[1] पर ऐसा है भरोसा मुझको।
मुफ़त भी ले तो करूं उसके हवाले दिल को॥

तुम जो पूछो तो करूं कौन तमन्नाये-अज़ल[2]।
जान भी दे न क़ज़ा[3] को जो अदा ले दिल को॥

कहते हैं शौक़ से आये मेरी महफिल में "अमीर"
साथ लाये न मगर लौटने वाले दिल को॥

* *

1. नख़रों के तीर 2. मरण कामना 3. मृत्यु

ग़म नहीं, जी तन से निकला, दिल गया।
मिल गये तुम मुझको सब कुछ मिल गया॥

ऐ निगाहें - यास[1] तेरा हो बुरा।
घर तलक रोता हुआ क़ातिल गया॥

तेग़े - क़ातिल हैं अरे वादे-बहार।
जब चली वह ग़ुन्चऐ-दिल खिल गया॥

जंमअ हैं सीने में पैकां[2] तीर के।
सौकड़ों दिल हैं अगर इक दिल गया॥

फूंक देती क्यों न पखाने को शम्य्ः
प्यार करने को सरे - महफिल गया॥

वाय-क़िस्मत[3] ग़ाफ़िल[4] आया मैं "अमीर"।
उम्र भर गाफ़िल रहा, ग़ाफ़िल गया॥

* *

1. निराशा की आंख 2. टुकड़े 3. भाग्यहीनता 4. बेसुधी

जब तक कि चश्मे-शौक़ मे वहदत[1] का नूर था।
जिस बाम पर निगाह पड़ी कोहे-तूर था॥

सूरत तेरी दिखा के कहूंगा यह रोज़े-हश्र[2]।
आंखों का कुछ गुनाह न दिल का क़ुसूर था॥

वह लुत्फ़े-इन्तज़ार[3] वह सामने-वस्ल हाय।
दिल को ग़मे-फ़िराक़ में भी क्या सुरूर था॥

मेहमान एक आन की थी आन हुस्न की।
इतनी सी बात पर तुम्हें इतना ग़ुरूर था॥

इक नीमजां[4] का काम न पूरा हुआ 'अमीर'।
क़ातिल को तेगे-नाज़[5] पर नाहक ग़ुरूर था॥

* *

1. ईश्वरीय 2. प्रलय का दिन 3. प्रतीक्षा का आनन्द 4. अधमरा 5. तलवार के समान अदाएं

यह आफ़तातब है गर्म उसकी क्रिबयाई[1] का।
कि ज़र्रा-ज़र्रा है आईना ख़ुद नुमाई का॥

ज़माना भर के हंसी क्यों न जान दे उस पर।
चलन उसी से तो सीखा है दिल रूबाई का॥

फ़क़ीर उसकी गली का हूं मैं अजब क्या है।
जो ताज शाह को, कासा मेरी गदाई[2] का॥

यह किस की राह में खोये गये कि हमसे ख़िज्र[3]।
तारीफ़ पूछते हैं आके रह नुमाई का॥

हया तो यह है कि सत्तर हज़ार परदों में।
मगर है सौक़ उसे आलम-आशनाइ[4] का॥

समझ रहा है जिसे हश्र ओ नश्र[5] तू ज़ाहिद।
करिश्मा वह भी है एक उसकी ख़ुश अदाई[6] का॥

तरीक़े-इश्क़ में ग़ुम होके पहुंचे मंज़िल पर।
नया यह रास्ता सुझा हमें रसाई[7] का॥

रहे-तलब में अदब ही से सर फ़राज़ी[8] है।
मज़ा कलीम[9] से पूछों बरहना पाई[10] का॥

* *

1. बड़प्पन 2. फ़कीरी 3. एक देवता का नाम 4. संसार भर से मित्रता 5. लोक-परलेक 6. नाज़-नखरे 7. पहुंच 8. प्रतिष्ठा 9. एक देवता का नाम 10. नंगे पैर रहना

कहते हैं मुझसे कि मुझपर है यह तुहमत कैसी
दिल में तेरे हैं, तो .जालिम मेरी हसरत कैसी।

प्यार क्या-क्या तेरी रफ्तार को फ़ितनों ने किया।
तेरी ठोकर से मिली उठके क़यामत कैसी॥

नाविके-नाज़[1] की आमद जो कहीं सुन ली है।
दिल में घबराई हुई फिरती है हसरत कैसी॥

क्यारियां फूलों की देखीं जो कभी गुलशन में।
याद आई मुझे अहबाब की सुहबत कैसी॥

दर्द उठ-उठके तहे-ख़ाक[2] जो तड़पाता है।
बैठी है मुझको दबा कर मेरी तुरबत कैसी॥

आज बीमार तेरा उठके अदम को पहुंचा।
ज़ौफ़[3] हद से जो बढ़ा आ गई ताक़त कैसी॥

* *

1. नख़रो के तीर 2. मिट्टी के नीचे 3. निर्बलता

छेड़ को ठहरे तो हम चुप नहीं रहने वाले।
कभी आई पे नहीं चूकते कहने वाले॥

बंद बातों में किसी से नहीं रहने वाले।
हम तो ऐ गुंचा-दहन मुंह पे है कहने वाले॥

बुलबुलों ,फूलों से क्या पूछती हो हाले-चमन।
बाग़ में यह तो हैं दे-रोज़ के रहने वाले॥

मंज़िले-गौर[1] से दम लेके बढ़ेगें आगे।
हम मुसाफ़िर हैं, बड़ी दूर के रहने वाले॥

न सुनी गोरो-ग़रेबां[2] में किसकी ने फ़रियाद।
कितने बेदर्द हैं इस शहर मे रहने वाले॥

मुंह पे तलवार के कह दें के पूरी न पड़ी।
तुमने देखे हैं कही ऐसे भी कहने वाले॥

मिस्ले-आवाज़[3] निकल जायेंगे साफ ऐ ज़ंजीर।
हम ये हर रोज़ की कड़ियां नहीं सहने वाले॥

गुफ्तगू मारफ़ते - हक़[4] में है यारो नाहक।
हक़ जो कहने का था सब कह गये कहने वाले॥

* *

1. क़ब्र के स्थान से 2. क़ब्र के अन्दर 3. आवाज़ की भांति 4. ईश्वरीय प्रेम

कही यह भी न छिप जाये नज़र से।
नज़ाकत लिपटी जाती है कमर से॥

वह फ़ितना[1] हश्र में उठने को तरसे।
गिराये तू जिसे अपनी नज़र से॥

न आया तीर जब कोई उधर से।
लिपट कर ख़ूब रोया दिल जिगर से॥

तड़पने का मज़ा जी भर कर ले लूं।
ज़रा थम-थम के दर्द उठ जिगर से॥

हुजूमें - आरज़ू[2] है वक्ते - आख़िर[3]।
पतंगे लिपटे हैं शमए - सहर[4] से॥

"अमीर" उस क़त्लगह को ले चला है।
लिपट कर खुद मेरा दामन क़मर से॥

* *

1. उपद्रव 2. इच्छाओं की भीड़ 3. अन्तिम समय 4. प्रातःकालीन दीपक

ताबये-दीं[1] कभी दौलत पे न शैदा होगा।
पैरूये-शेरे-खुदा[2] क्या सगे-दुनिया[3] होगा॥

मारफ़त[4] के लिये है तर्के-ताल्लुक़ लाज़िम।
ख़ूब समझेगा वह तनहा कि जो तनहा होगा॥

मर्ग के बाद है बेकार दिलों को आराम।
नींद भर कर वही सोयेगा जो जागा होगा॥

टुकड़े-टुकड़े नहीं बेवजय मेरा दिल साक़ी।
कोई शीशा किसी मैख़ाने में टूटा होगा॥

हमने अंदेशये-पीरी[5] मे जवानी काटी।
रात भर ख़ौफ़ रहा सुबह को अब क्या होगा॥

दिल को आग़ाज़े-मुहब्बत में न समझो थोड़ा।
बढ़ते-बढ़ते यही क़तरा कभी दरिया होगा॥

बेवफ़ाई से तुम्हारी यही हरदम है खयाल।
तुम जो अपने न हुए कौन किसी का होगा॥

यह न होगा कि जगह दोस्त की ख़ाली देखूं।
दिल भर आयेगा तही मैय से जो मीना होगा॥

* *

1. धार्मिक व्यक्तित्व 2. ईश्वर-भक्त 3. सांसारिक कुत्ता 4.दूरी एंव ज़रिया 5. बुढ़ापे का भय

जी ही लेगा ग़मे-जानां मेरा।
मुझको खा जायगा मेहमां मेरा॥

तुझसे दामन है तेरा चीं-ब-जबीं[1]।
तंग है मुझसे गरेबां मेरा॥

दफ्तरे-दहर[2] परेशां हो अभी।
दिल जो हो जाय परेशां मेरा॥

चार आंसू जो नदामत[3] के बहे।
धो गया नामये-इसियां[4] मेरा॥

क्यों उठा दर्द मेरे पहलू से।
क्यों ख़फ़ा मुझसे है मेहमां मेरा॥

क्या दो रंगी है ज़माने की "अमीर"।
मैं हज़ीं[5], जख्म हैं ख़दां[6] मेरा॥

* *

1. क्रुद्ध 2. दुनिया 3. शर्मिन्दगी 4. गुनाहों का काग़ज़ 5. दुःखी 6. हंसता

हर जाम में है जलवये-मस्ताना किसी का।
मैख़ाना हमारा है ज़िलौ-ख़ाना[1] किसी का॥

जब देखते हैं अब्रे-सि यह[2] कहते हैं हम मस्त।
जाता है यह उड़ता हुआ मैख़ाना किसी का॥

सक़ी न दिखा बहरे-खुदा[3] साग़रे-ख़ाली।
लब्रेज़ हुआ जाता है पैमाना किसी का॥

फ़रहाद पे क्या गुज़री जो मुझपे नहीं गुज़री।
मैं अपने सिवा क्यों कहूं अफ़साना किसी का॥

होती है जगह गंज[4] की वीराना हमेशा।
जो दिल है शिक़स्ता वह है काशाना किसी का॥

बेकार "अमीर" अपने दिल-ओ-दीदा[5] नहीं हैं।
आईना किसी का है यह वह शाना किसी का॥

* *

1. प्रकाश स्थल 2. काले बादल 3. भगवान के लिए 4. ख़ज़ाना 5. हृदय व आंख

सर्द अहें जब किसी ने की, वतन याद गया।
चार झौंके जब चले ठंडे चमन याद आ ग़या॥

जिस जगह दो गज़ ज़मीं पाई खुदी समझा में ग़ौर[1]।
जब नई दो चादरें देखीं कफ़न याद आ गया॥

तन से बाहर आके ध्यान आया अदम का रूह को।
क़ैद से छुट कर मुसाफ़िर को वतन याद आ गया॥

ग़ौर में भी हम न भूले सुहबते-अहबाब[2] को।
गोशये-ख़िलवत[3] में लुत्फ़े-अंजुमन[4] याद का गया॥

जामये-सद-पारये-गुल[5] जब नज़र आया मुझे।
सौ जगह से चाक अपना पैरहन[6] याद आ गया॥

रह गया अपने गले में डाल कर बाहें ग़रीब।
ईद के दिन जिसको ग़ुरबत[7] में वतन याद आ गया॥

* *

1. क़ब्र 2. मित्रों का साथ 3. नितान्त एकान्त 4. बैठकों का आनन्द 5 सैंकड़ों टुकड़ो वाला कपड़ा 6. लिबास 7. परदेस

आइना तेरे हुस्न का दिल भी है जिगर भी।
है एक ही सूरत कि इधर भी है उधर भी ॥

साक़ी हूं तेरी बज्म में कमैं तिश्ना-जिगर[1] भी।
सदक़े तेरी आंखों के कोई जाम इधर भी॥

कुम्हलाये चले जाते हैं गुल किसकी है आमद।
घबराई हुई फिरती है कुछ वादे-सहर[2] भी॥

अल्लाह रे ना-ताक़ती-ओ-ज़ौफ़[3] का आलम।
मैं क्या कि पहुंची नहीं वां मेरी ख़बर भी॥

क्या जानिये क्या हाल है याराने-अदम का।
इक उम्र हुई उनकी नहीं आई है ख़बर भी॥

वह चेहरये-पुर बूर है इक बर्क़े-तजल्ली[4]।
किस आंख से देखूं मैं ठहरती है नज़र भी॥

बुतख़ाने से दिल अपना न काबे से फिरा है।
कुछ सोच के अंजाम इधर भी है उधर भी॥

पीरी में भी जायेगी जवानी की न ग़फ़लत[5]।
अल्लाह जो है आंख खुले वक्ते-सहर भी॥

* *

1. प्यासा हृदय 2. प्रातः काल 3. कमज़ोरी एंव बुढ़ापा 4. बिजली की चमक 5. बेसुधी।

दिल में ख्याल आंखों का लाया न जायगा।
मयख़ाना घर खुदा का बनाया न जायगा॥

आहों से सोज़े-इश्क़[1] मिटाया न जायगा।
आंधी से यह चिराग बुझाया न जायगा॥

गर हैं यही जफ़ायैं तो ज़ालिम जज़ा[2] के दिन।
आड़े मेरी वफ़ा से भी आया न जायगा॥

क्यों यास[3] तोड़ती है मेरे दिल का आसरा।
यह घर उजड़ गया तो बसाया न जायगा॥

दिखला के सबको दस्ते-हिनाई[4] वह कहते हैं।
आशिक़ का यह लहू है छिपाया न जायगा॥

दीदारे-यार का न उठेगा मज़ा "अमीर"।
जब तक दुई[5] का परदा उठाया न जायगा॥

* *

1. प्रेम की जलन 2. बदला मिलने के दिन 3. निराशा 4. मेहन्दी के हाथ
होना

कुछ ठिकाना है नातवानी[1] का।
न उठा बोझ ज़िन्दगानी का॥

दाग़ दिल में जो है ज़वानी का।
गुल है ये शमए-ज़िन्दगानी का॥

जानता हूं कि ख़ुदनुमा[2] हो तुम।
पर्दा कब तक यह लन तरानी[3] का॥

और ऐ पीरे-चर्ख़[4] क्या कोसूं।
सब्र तुम पर मेरी ज़वानी का॥

मर्ग जिसको जहां में कहते हैं।
नाम है मेरी ज़िन्दगानी का॥

मिस्ले-शबनम[5] हमारी क़िस्मत में।
एक दाना है वह भी पानी का॥

न उठा मुफ़लिसी[6] में दस्ते-सवाल।
है यह एहसान नातवानी का॥

क्यों न पीरी में दाग़े-दिल हों अज़ीज़।
फूल है बाग़े-नौ जवानी का॥

* *

1. निर्बलता 2. आत्म प्रदर्शक 3. इन्कार 4. वृद्धावस्था 5. ओस की भांति
6. निर्धनता

जब से बुलबुल तूने दो तिनके लिये।
लोटती हैं बिजलियाँ उनके लिये॥

दिन मेरा रोता है मेरी रात को।
रात रोती है मेरे दिन के लिये॥

है जवानी खुद जवानी का सिंगार।
सादगी गहना है इस सिन[1] के लिये॥

कौन वीराने में देखेगा बहार।
फूल जगंल में खिले किनके लिये॥

सारी दुनियां के हैं वो मेरे सिवा।
मैंने दुनिया छोड़ दी जिनके लिये॥

वस्ल का दिन और इतना मुख्तसर[2]।
दिन गिने जाते थे इस दिन के लिये॥

दिल का जामिन[3] तू मेरा क्या ऐतबार।
पहले एक ज़ामिन हो ज़ामिन के लिये॥

झाड़नी है कौन से गुल की नज़र।
बुलबुले फिरती हैं क्यों तिनके लिये॥

* *

1. आयु 2. संक्षिप्त 3. जमानती, पक्षधर

गुल सुनते है कब सदाये-बुलबुल[1] ।
अपनी सी हज़ार गाये बुलबुल ॥

रंग अपना अगर जमाये बुलबुल ।
हों खिंदये-गुल[2] सदाये-बुलबुल ॥

गुलचीं रहे-सहने-बग़ भूला ।
मक़बूल[3] हुई दुआये-बुलबुल ॥

तोड़ा गुलचीं ने जब कोई फूल ।
आई आवाज़, हाय बुलबुल ॥

गुलज़ार में आग सी लगी है ।
क्या गर्म है नाला हाये-बुलबुल[4] ॥

है हुस्न से क़द्रे इश्क़ बाला ।
गुल से है बुलन्द जाय बुलबुल[5] ॥

आख़िर तो तड़प-तड़प के दी जां ।
देखी अय गुल वफ़ाये-बुलबुल ॥

आया है नहाने को जो वह गुल ।
है बुलबुलों में सदाये-बुलबुल ॥

* *

1. बुलबुल की आवाज़ 2. फूलों की हंसी 3. स्वीकार 4. शोर करती बुलबुल
5. बुलबुल का उच्च स्थल

चमकाये हैं क्या दागे जिगर आहे-र सा[1] ने।
इन फूलों में आग लगा दी है सबा ने॥

यां हाथ उठाया है दुआ के लिये मैंने।
तासीर से वां[2] हाथ उठाया है दुआ ने॥

किस-किस के चले जोड़ शबे-वस्ल में मुझ पर।
चकमें दिये शौख़ी ने तो की चाल हया ने॥

बरसात में भी यह न उभरना था, न उभरी।
छींटे दिये क्या-क्या मेरी तौबा को घटा ने॥

हर गाम पे लग़ज़िश[3] थी रहे-इश्क़ में लेकिन।
फ़िसले तो संभाला हमें तसलीम-ओ-रज़ा[4] ने॥

यह ख़ुशख़बरी नज़ा[5] में दी मुझको ख़ज़ा ने।
भेजा है अयादत[6] को तेरी मुझको अदा ने॥

सह-सह के सितम तुम को सितम गर बनाया।
दर पर्दा सितम मुझ पे किया मेरी वफ़ा ने॥

ख़ामोश चले जाते हैं दुनियां से हज़ारों।
क्या जानिये क्या कह दिया चुपके से क़ज़ा ने॥

* *

1.उठती हुई आह 2. वहां 3. कम्पन 4 ईश्वरीय विश्वास 5. मरते समय 6. हाल पूछने

न आओ तुम तो मिज़ाजे चमन बहाल न हो।
शजर निहाल[1] न हो गुल का चेहर लाल, न हो ॥

यह ग़ैर से है मुहब्बत कि मैं जो हूं बीमार।
वह देखने को जो न आये जो ग़ैर-हाल न हो ॥

जो ओछे ज़ख्म भी हंसते है मैं यह डरता हूं।
हंसी-हंसी में किसी को मलाल[2] न हो ॥

यह चाहता है तहय्युर[3] कि दोंनों हो तस्वीर।
उधर जवाब न हो, इधर सवाल न हो ॥

खुशी की दिल में तमन्ना भी कर नहीं सकता।
ख्याल है तेरे ग़म को कहीं मलाल न हो ॥

करो बनाव संवारो तुम अपने गेसू को।
पर इस क़दर कि परेशां किसी का हाल न हो ॥

उरू से-मर्म[4] से भी लिपट नहीं सकता।
ख़याल है कि उन्हें और कुछ ख़याल न हो ॥

बहुत हुये है ज़माने में लोग शादो-मर्ग[5]।
शबे-बिसाल है अपना कहीं विसाल न हो ॥

* *

1. खुश, आसक्त 2. दुःख न हो 3. आश्चर्य 4. मृत्यु रूपी दुलहन 5. खुश व मरण

वाह क्या ख़ूब पर ओ-बाल निकाले बुलबुल।
उड़ते ही पड़ गई सैयाद[1] के हावाले बुलबुल॥

बाग़बां रहम से वाक़िफ़ नहीं गुलचीं[2] बेदर्द।
एक हम हैं तेरे पहिचानने वाले बुलबुल॥

न जला तुझसे क़फ़स मैंने चमन फूंक दिया।
देख हैं गर्म तेरे या मेरे नाले बुलबुल॥

फूल गुलशन में आये थे कि सैयाद आया।
दिल के अरमान कहां क्या ख़ाक निकाले बुलबुल॥

हंस रहा है अभी सैयाद नहीं बाक़िफ़ है।
चुटकियां लेगें जिगर में तेरे नाले[3] बुलबुल॥

बाग़बाँ का जो शब-ओ-रोज़ जलाना है यही।
आशियाँ बर्क़ के कर देगी हवाले बुलबुल॥

फूल फूल हुये बैंठे हैं चमन में तुझसे।
चह-चहे करके .जरा उनको मना ले बुलबुल॥

तुझसे हंसते हैं कभी करते हैं गुलचीं से मज़ाक़।
इन गुलों के है कुछ अन्दाज़ निराले बुलबुल॥

* *

1. शिकारी 2. फूल तोड़ने वाला 3.रूदन

शर्म आती है कि यार को बे वफ़ा कहूं।
अच्छा कहा है जिसको उसे क्या बुरा कहूं॥

हर बार उसकी तेग़ के खिंचने को क्या कहूँ।
इस शोख़ की अदा कि मैं अपनी क़ज़ा[1] कहूं॥

क्योंकर बयां करूं जो मज़ा ख़ामोशी में है।
कहन की हो न बात तो में उसको क्या कहूँ॥

मैं क़िस्सा-गो नहीं कि कहे जाऊं दास्तां।
दिल से जो तू सुने तो कुछ ऐ दिलरूबा कहूँ॥

मुझसे तो एक ने भी निबाही न दोस्ती।
जुज़[2] आशना किसे, किसे ना आशना[3] कहूं॥

वह खुश रहे मुझे हक़-ओ-बातिल[4] से काम क्या॥
बेजा भी वह कहें, तो में उसको बजा कहूँ॥

दोनों तरफ था एक सा आलम विसाल का।
अपना कहूँ लिहाज़ कि उसकी हया कहूँ॥

ऐसा हूँ इश्क़े-आरिज़-ओ-गेसू में बेहवास।
बिजली चमक के आये तो उसको घटा कहूँ॥

* *

1. मृत्यु 2. अर्ध परिचित 3. अपरिचित 4. सच और झूठ

हर कली कहती है खिल कर तेरे दिवाने से।
देख निकली है परी सज कर परी ख़ाने से॥

साक़िया जाते हैं प्यासे तेरे मैखाने से।
घूंट दो घूंट छलकते हुऐ पैमाने से॥

बुत बने बैठे हैं बुत, जी मेरा घबराता है।
उठ के काबे को चला जाऊंगा बुतख़ाने से॥

लामकां[1] के जो किताबों में लिखें हैं अवसाफ[2]।
मिलते जुलते है वह कुछ-कुछ मेरे वीराने से॥

रक्स करने लगा दम भर मे छलक कर साक़ी।
कह दिया झुक के यह क्या शीशे ने पैमाने से॥

मैंने ज़ुल्फ़ों को सना की तो कहा चुप भी रहो।
दम उलझता है इस उलझे हुऐ अफ़साने से॥

पास आते ही जला-फूंक के रख देती है।
शमा की आग को क्या लाग है परवाने से॥

कल नज़र आये थे जाते हुये मस्जिद को "अमीर"।
आज देखा तो चले आते हैं मैखाने से॥

* *

1. बेघर-बार 2.गुण

गुलशने- फ़िरदौस[1] है रूख़सारे यार।
आबे - कौसर[2] शर्बते-दीदाहे-यार ॥

हैं जो आंखे तालिबे-दीदारे यार।
ज़ीदा-मर्दा मुर्दे, ज़िंदा हो चले ॥

हश्र बर्पा[3] कर चली रफ्तारे-यार।
बर्क़ चमकी थी जो कोहेतूर पर ॥

वह भी था एक वर्तबे-रूखसारे[4]-यार।
आँख उसे कहिये जो देखे वह जमाल ॥

काश होती रोज़ने-दीदारे[5] यार।
कान वह है जो सुने गुफ्तारे-यार[6] ॥

इस क़दर ग़ालिब न हो एख्वाबे-मर्ग[7]।
आ चुका है वादये-दीदारे-यार ॥

* *

1. स्वर्ग का बाग़ 2. क़ौसर नहर का पानी 3. प्रलय पैदा करना 4. प्रीय के कपोलो का प्रतिबिम्ब 5. प्रिय की दीवार की खिड़की 6. प्रिय की बातचीत 7. मृत्यु की नींद

चांदनी में जो वह आ जाता है।
चांद को दाग़ लगा जाता है॥

किस क़दर ज़ार[1] है आशिक़ तेरा।
रंग के साथ उड़ा जाता है॥

सर बकफ़[2] मैं हूँ वह शमशीर बकफ़।
फ़ैसला आज हुआ जाता है॥

आईना देख के शर्मायें न आप।
देखिये कोई खपा जाता है॥

दिल लगी समझे हो दिल का आना।
जान जाती है जब आ जाता है॥

* *

1. निर्बल 2. हथेली पर सर लिए रहना

फ़र्क बादे-मर्ग कुछ दिल की जलन में क्यों नहीं।
चैन यारब सायये-अब्रे-कफ़न में क्यों नहीं॥

उड़ गई रूहें शहदात[1] गाहे-उल्फ़त[2] से कहां।
रूह को आराम आग़ोशे-बदन में क्यों नहीं॥

आशियाने इन ग़रीबों के चमन में क्यों नहीं।
या खुदा इख़लास[3] इस दूल्हा-दुल्हन में क्यों नहीं॥

सूरते-ज़ाहिर है सूरत आफ़री[4] पोशीदा[5] से।
अंजुमन आरा[6] का जलवा अंजुमन में क्यों नहीं॥

हाथ है तेरे तो देने को हज़ारों ऐ करीम[7]।
सैकड़ों दामन हमारे पैरहन में क्यों नहीं॥

जामा-ज़ेबो वह नुमाईश बादे मुर्दन[8] क्या हुई।
पैरहन में थी जो सजधज वह कफ़न में क्यों नहीं॥

वह दत-ओ-क़सरत[9] तो दोनों हैं उसी के जलवा-गाह।
फि जो ख़िलवत[10] में मज़ा है अंजुमन में क्यों नहीं॥

सैकड़ों जाते हैं हस्ती से अदम को रात दिन।
मेरी ग़ुर्बत[11] की ख़बर अब तक वतन में क्यों नहीं॥

* *

1. गवाही देने राली आत्मा 2. प्रेम 3. प्रणय बेदी 4. प्रतिभावान 5. छिपा हुआ 6. सभा को सजाने वाले 7. कृपानिधान 8. मरणोपरान्त 9. एक और बहुत होना 10 एकान्त 11. परदेस

अज़ीज़-अहबाब[1]-साथी दम के हैं फिर छुट जाते हैं।
जहां ये तार टूटा सारे रिश्ते टूट जाते हैं॥

कड़ी मंज़ील है पीरी दांत भी सब टूट जाते हैं।
क़दीमी[2] साथ यारो के यही तो छूट जाते हैं॥

इलाही क्या इलाक़ा[3] है वह जब लेता है अंगड़ाई।
मेरे सीने में सब जख्मों के टांके टूट जाते हैं॥

अजब कांटा है साक़ी मुहतसिब[4] जब आ निकलता है।
तो सब जाम-ओ-सुबू छालों की सूरत फूट जाते हैं॥

ज़माने भर में हैं मशहूर हाल उख़वाने युसूफ़[5] का।
तमा दुनियां का वह है जिसमें बाजू टूट जाते हैं॥

"अमीरे"-ज़ार की तुरबत को छत समझें है क्या घर की।
यह मातम-दार आ कर छातिया क्यों कूट जाते हैं॥

* *

1.मित्र-सम्बंधी 2. पुरातन 3. सम्बंध 4. परहेज़ करने वाला 5. यूसुफ के भाई

उल्फ़त में बराबर है वफ़ा हो कि जफ़ा हो ।
हर बात में लज्ज़त है अगर दिल में मज़ा हो ॥

हम-तुम हो शबे-वस्ल अकेले तो मज़ा हो ।
हमसे हो अदब दूर हया तुमसे जुदा हो ॥

मेहमाने-चमन आज है मेरा गुले-नाजुक[1] ।
कह दो कि दबे पांव खा[2] बादे-सबा[3] हो ॥

बहशत को मेरे साथ मेरे दफ़न न करना ।
घर ख़ाना-ख़राबी का मेरे घर से जुदा हो ॥

तू सूरते-दरिया है हुबाब[4] अहले-जहां में ।
तेरा है तेरी राह में सर जिसका जुदा हो ॥

नैरंगिये-हुस्न[5] उसको यह कहती है शबे-वस्ल ।
चितवन में शरारत हो तो आंखों में हया हो ॥

रहम उस दिले-पुर दाग़ पर ऐ उलफ़ते-मिज़गा[6] ।
कांटों में न खींच उसको जो फूलों में पला हो ॥

उठ जाते हैं महफ़िल से जो हो जाती है गुल शमा ।
डरते हैं कि मुझसे न मिली बादे-सबा हो ॥

* *

1. कोमल फूल 2. बढ़ना-बहना 3. ठंडी हवा 4. बुलबुला 5. सौन्दर्य की विभिन्नता
6. पलकों का प्रेम

विषय-सूची

जो तुम हो मेरे दिल में तो दिल यही है।
यही घर है लैला का महफिल[1] यही है।

रहे-इश्क़ में् जिस जगह गिर पड़ा मैं।
कहा ज़ौफ़[2] ने तेरी मंज़िल यही है॥

अज़ल गोर[3] तक मुझको पहुँचा के बोली।
मुसाफ़िर ठहर तेरी मंज़िल यही है॥

अदम में फिराक़े-अहबा[4] का ग़म क्या।
यहीं आयेंगे सब की मंज़िल यही है॥

"अमीर" उससे तेवर मेरे कर रहे हैं।
तेरी बांकी चितवन का बिसमिल[5] यही है॥

* *

1. कजावा 2. निर्बलता 3. क़ब्र 4. मित्रों का बिछोह 5. घायल

न शौक़े-वस्ल का मौक़ा न .ज़ौक़े-आशनाई[1] का।
मैं इक नाचीज़ बन्दा और उसे दावा .ख़ुदाई का॥

हदफ़[2] दिल को बनाते हैं जो कुच कहिये तो कहते हैं।
सिखाते हैं चलन तीरों को अपने दिल-रूबाई का।

शबे-वसलत[3] नज़ाकत उनकी शौक़े-वस्ल से बोली।
तरस खा मुझपे ज़ालिम वक्त है बे दस्त-ओ-पाई[4] का॥

वफ़ा मंज़ूर उसको नहीं है उसकी फ़ुर्क़त में।
सबक़ पढ़ने चली है उम्र उससे बेवफ़ाई का॥

कफ़स में हूं मगर सारा चमन आंखों के आगे है।
रिहाई के बराबर अब तसब्बुर है रिहाई का॥

बुरा हो हाय इस उम्रे-खां[5] की बेवफ़ाई का।
न रातें वस्ल की देखीं न दिन हमने जुदाई का॥

पड़ी हैं हसरतें मुर्दा जिलादे उनको ऐ ईसा।
ज़रा हम भी तो देखें खेल क़ुदरत आज़माई का॥

बहार आती है अब असमत का पर्दा फ़ाश होता है।
जूनुं का हाथ है आज और दामन पारसाई का॥

* *

1. मित्रता की चाह 2. निशाना 3. मिलन की रात 4. हाथ-पैर का बेकार होना
5. चलता हुआ जीवन

लोट हो जिस पे तब्बसुम वह दहन किसका है।
बातें मुंह चूमें रह अन्दाज़े-सुखुन किसका है॥

फ़ितने पिसते हैं यह बे-साख़्तापन[1] किसका है।
हश्र की कुछ नहीं चलती यह चलन किसका है॥

चुभ रही है दिले-पुर-दाग़[2] में पलकें किसकी हैं।
तुलतें हैं फूलों में कांटे यह चमन किसका है॥

घर उजड़ते भी हैं बसते भी है लेकिन ऐ रूह।
जो उजड़ कर न बसे वह वतन किसका है॥

देख कर ख़त तेरे गालों पे यह कहती है बहार।
कांटें फूलों से हैं नाज़ुक यह चमन किसका है॥

* *

1. सादगी 2. दाग़ से भरे हुए

पहले निगाह फिर मेरी दुश्मन हया हुई ।
वह एक थी यह दूसरी ऐ दिलरूबा[1] हुई ॥

है बख्शने न बख्शने में उनको आख्तियार ।
तू है गुनाहगार कहे जा ख़ता हुई ॥

लटकाये क्यों गये हैं यह कैसी सज़ा सना हुई ।
गेसू तो ख़ुद बला थे इन्हें क्या बला हुई ॥

रहम आ गया करीम को मुहताज देख कर ।
हाजत ही इस ग़रीब की हाजत खा हुई ॥

अब आंख क्या मिलायेगा मस्तों में दुख्ते-रज़[2] ।
क़ाज़ी के घर में पड़के बड़ी पारसा[3] हुई ॥

क्या क्या लिबास शाने-करम के हैं देखना ।
ख़ाके-शफ़ा[4] हुई कहीं आबे-बक़ा[5] हुई ॥

इक उम्र हो गई शबे-फ़ुर्क़त को मेरे घर ।
अब भी जो इब्तेदा[6] है तो बस इन्तहा हुई ॥

है वस्ल में तो हिज्र से भी बढ़के इज्तराब[7] ।
तड़पाने में तो दर्द से दूनी दरा हुई ॥

* *

दिल लुभाने राला 2. मदिरा 3. साधु 4. स्वास्थवर्धक माटी 5.अमृत 6. आरम्भ
बेचैनी.

ग़ज़ब है अपने ऐबों का ख्याल आये न इंसां को।
किया है शर्म उरियांनी[1] ने ख़म शमशीर उरियाँ को॥

मैं इक .गुरबत-ज़दा[2] बाक़ी रहा था मैं भी आता हूँ।
मुबारक बाद दे आये कोई गोरे-ग़रीबां को॥

बहुत ही मुख़्तसर[3] है वस्ल की शब कुछ तो बड़ जाये।
मेरे ख़ातिर से दम भर खोल दो ज़ल्फ़े-परेशां को॥

हवाये-गुल इसे कहते हैं ऐ बुलबुल कि जंगल में।
लिये फिरता है हर ताऊस[4] साथ अपने गुलिस्तां को॥

"अमीर" ऐसी कहां क़िस्मत कि पहुँचू उड़ के फूलों तक।
कभी चाके-क़फ़स से झांक लेता हूं गुलिस्तां को॥

* *

1. अनावस्था की लाज 2. परदेसी 3. संक्षिप्त 4. मोर

आरज़ू वस्ल की अच्छी यह ख्याल अच्छा है।
हाय पूरा नहीं होता है, सवाल अच्छा है॥

नज़ाअ[1] में मैं हूं वह कहते हैं कि ख़ैरियत है।
फिर बुरा होता है कैसा जो यह हाल अच्छा है॥

तुझसे मांगू में तुझी को कि कभी मिल जाय।
सौ सवालों से यही एक सवाल अच्छा है॥

फूल फल हो कि न हो छांव घनी हो जिसमें।
हर मुसाफ़िर की नज़र में वह निहाल[2] अच्छा है॥

देख ले बुलबुल-ओ-परवाना की बेताबी को।
हिज्र अच्छा नहीं हसीनों का वसाल अच्छा है॥

चीज़ मांगे की हो अच्छी भी तो किस मसरफ़[3] की।
हो बुरा भी मगर अपना हो तो माल अच्छा है॥

जिसका अंजाम मुसीबत वह खुशी भी है बुरी।
जिसका अंजाम खुशी हो वह मलाल अच्छा है॥

शोख़ियां वस्ल में करती हैं जो दिल को मायूस।
शर्म देती है तसल्ली कि माल अच्छा है॥

* *

1.मरणासन 2. पेड़ 3. कार्य

एक दिले-हमदम मेरे पहलू से क्या जाता रहा।
सब तड़पने तिलमिलाने का मज़ा जाता रहा॥

सब करिश्में थे जवानी के जवानी क्या गई।
वह उमंगे मिट गईं वह बलबला[1] जाता रहा॥

दर्द बाक़ी, ग़म सलामत है मगर वह दिल कहां।
हाय वह ग़म दोस्त वह दर्द आशना[2] जाता रहा॥

आने वाले, जाने वाला बेकसी में कौन था।
हां मगर इक दम ग़रीब आता रहा, जाता रहा॥

झूठे वादों से वह जन्नत का सहारा भी गया।
वाय क़िस्मत[3] यास का भी आसरा जाता रहा॥

शरबते-दीदार से तस्कीन[4] सी कुछ हो गई।
देख लेने से दवा के, दर्द क्या जाता रहा॥

नींद की फ़ुर्क़त में खा बैठी है आने की क़सम।
ख़क्वाब में भी देखने का आसरा जाता रहा॥

शोख़ियां रग-रग में हैं जमता वहां है किसका रंग।
आते-आते हाथ में रंगे-हिना[5] जाता रहा॥

* *

1. जोश 2. दर्द जानने वाला 3. वाह री क़िस्मत 4. आराम 5. मेहन्दी का

हंस के फरमाते है वह देख के हालत मेरी।
क्यों तुम आसान समझते थे मुहब्बत मेरी॥

याद आती है दमे-फ़िक्र[1] जो वह तर्ज़े-ख़राम[2]।
नाज़ करती हुयी चलती है तबीयत मेरी॥

लमकां में न पता है न मकां में मेरा।
मुझको क्या जाने कि घर ले गई बहशत[3] मेरी॥

वस्ल में छेड़ का शिकरा न ज़ुबां पर लाना।
चूम लेगी तेरे होठों को शिकायत मेरी॥

जब मैं जानूं कि बदलता है ज़माना करवट।
वस्ल की शब से बदल दे शबे-फ़ुर्क़त[4] मेरी॥

* *

1. कल्पना के समय 2. चलने का ढंग 3. उन्दादता, पागलपन 4. विरह की रात

हिज्र में होश नहीं, ताब नहीं, सब्र नहीं।
उठ भी ऐ दर्दे-दिल अब क्यों है पड़ा तू दिल में॥

झूठे मोती जो समझता है इन्हें तू दिल में।
और इस ग़म से घुले जाते हैं आंसू दिल में॥

हुक्म है ज़ब्त मौहब्बत का कि हो रोज़ न फ़ाश।
आके आंखों मे पलट जाते हैं आंसू दिल में॥

ख़ाली माशूक़ के उश्शाक़[1] कहीं रहते हैं।
ध्यान तेरा है जा ऐ यार नहीं तू दिल में॥

निकल ऐ यास[2] कि है वस्ल में अरमां का हुजूम।
अब जगह इतनी नहीं है कि रहे तू दिल में॥

आंख उस आंख से देखो न मुक़ाबिल[3] हो "अमीर"।
इसी खिड़की से उतर आता है जादू इस दिल में॥

* *

1. प्रेमीगता 2. निराशा 3. सामने, सम्मुख

आमद जो शबे-वस्ल की सुन ले मेरे घर में।
अल्लाह रे ज़िद शाम से पहले सहर आये॥

रूख़सत तेरे बेकस को करे कौन दमें नज़ा।
हिचकी कि इलाही कोई वक्ते सहर आये॥

अल्ला रे सितम बेखुदिये-इश्क कि हम पर।
हम आप में आये तो कहा तुम किधर आये॥

आये वह दमें-बाज़[1] पंसी यूं मेरे घर में।
जिस तरह कहीं चांदनी पिछले पहर आये॥

हमसाया ही के कोठे पर आये पर आये माह।
चांद औरों के घर चांदनी ही मेरे घर आये॥

याद आये अगर मुझको चमन कूचे-क़फ़स[2] में।
दामन में लिये फूल नसीमें-सहर आये॥

किस तरह "अमीर" उनसे निबाहे कोई उल्फ़त।
दिल देने को हर रोज़ कहां से जिगर आये॥

* *

1. उल्टी सांस के समय 2.क़ैदख़ाने, पिंजरे का कौना

आके ग़ुरबत[1] में हमें ऐसे-वतन भूल गये।
लुत्फ़ उठाया ये क़फ़स में कि चमन भूल गये॥

मैं वो दिवानये-उरियां[2] था कि मरकद में अज़ीज़।
दफ़न करने लगे मुझको तो कफ़न भूल गये॥

क़ैद में तूल खिंचा यह कि असीराने-क़फ़स[3]।
शक्ले-गुल भूल गये रंगे-चमन भूल गये॥

सालहा-साल[4] हुये हैं, नहीं आई हिचकी।
क्या ग़रीबों को अज़ीज़ाने-वतन भूल गये॥

नाले घुट घुट के मेरे दिल ही में रहते हैं "अमीर"।
क्या बला उनको हुई राहे-दहन[5] भूल गये॥

* *

1. विदेश 2. नग्न पागल 3. पिन्जरे के बन्दी 4. सालों में 5. मुंह का रा

कुछ फिरो सी है वह निगाह दिल में।
तेग़ रूठी हुई है बिसमिल[1] से॥

रात की सुहबतें जो याद आईं।
उठ गई शमा रो के महफ़िल से॥

डूबी है किस ग़रीब की कश्ती।
सर पटकती है मौजें साहिल से॥

जान छूटेगी मरके क़ातिल से।
मुश्क़िल आसान होगी मुश्क़िल से॥

उम्रे-गुज़री हैं ठोकरें खाते।
मंज़िलों, दूर अभी हूं मंजिल से॥

वह मुसाफिर हूं मैं कि बन कर ख़िज्[2]।
ले गई ग़ुरबत[3] आके मंज़िल से॥

क्या ख़बर वादे-मर्ग[4] यारों की।
साथ छूटा है पहली मंज़िल से॥

मेरे पहलू से न उठ ऐ दर्द।
प्यार करता हूं मैं तुझे दिल से॥

* *

1. घायल 2. एक देवता का नाम 3. परदेस 4. मरणोपरान्त

बे तेरे हालत हैं यह गुलज़ार की।
निगहते-गुल[1] सांस है बीमार की ॥

हूँ वह लाग़र[2] दर पे उसके गिर पड़ा।
ख़ाके ठोकर सायये-दीवार[3] की ॥

आके बाली[4] पर मेरे बोली अज़ल।
मैं दवा हूं इश्क़ के आज़ार[5] की ॥

हश्र के दिन भी न आये नज़र।
दिल में हसरत रह गई दीदार की ॥

ऐ "अमीर" उसकी लगावट पर न जा।
मार डालेंगी निगाहें प्यार की ॥

* *

1. फूल की सुगंध 2. कमज़ोरी 3. दीवार का साया 4. सिरहाना 5. कष्ट

पाक दामन हो तो अरमाने- वसाल अच्छा है।
अच्छी नीयत हो तो अच्छों का ख्याल अच्छा है॥

इसका अंजाम-फ़िराक़ उसका अंजाम-बसाल[1] ।
कौन कहता है कि फ़ुर्क़त में वसाल अच्चा है॥

ग़म में गुज़रे तो बुरा, ऐश में गुज़रे तो भला।
न बुरा है कोई दुनिया में, साल अच्छा है॥

रोज़ आता है मेरे दिल को तसल्ली देने।
तुझपे ए दुश्मने-जां तेरा ख्याल अच्छा है॥

मेज़बां[2] मरता है मेहमान मज़े करता है।
दिल की हालत है बुरी दर्द का हाल अच्छा है॥

न सही ज़ौक़े-वफ़ा[3] शौक़े-जफ़ा[4] क्या कम है।
कुछ न होने से जैसा हो ख्याल अच्छा है॥

रश्क़ इस पर नहीं होता है किसी हासिद[5] को।
ख़ूब देखा तो खुशी से भी मलाल अच्छा है॥

क़ुबते-इश्क़[6] से ता कंगूरए-इश्क़[7] पहुंच।
रंग परवाज़ यह ऐ बे पर-ओ-बाल अच्छा है॥

* *

मिलन 2. जिसके घर अतिथि हों 3. प्रेम का शौक़ 4. अत्याचारेच्छा 5. जलने
ा 6. प्रेम की शक्ति 7. प्रेम की चरम सीमा

दो जहां छोड़ के उरशाक़[1] तेरे ग़म में रहे।
दोनों आलम से जुदा तीसरे आलम में रहे॥

महो-तस्वीर[2] की सूरत यह तेरे ग़म में रहे।
न रही इतनी भी बाक़ी कि ख़ुदी हम में रहे॥

हैफ़[3] है तुम मेरे मरने का ज़रा ग़म न करो।
आंख तर शमा की परवाने के मातम में रहे॥

उनको तड़पाने की ताक़त जो नहीं हम में न हो।
क़ाश अपने ही तड़पने की सकत हम में रहें॥

बातें नासिह[4] की सुनीं यार के नज़्ज़ारे किये।
आंखे जन्नत में रही कान जहन्नुम में रहे॥

* *

1. चाहने वाले, प्रेमीगण 2. तल्लीनता 3. लानत 4. नसीहत करने वाले

बला पे सब्र किया ऐसे-जावदां[1] के लिये।
मज़े हैं ख़िल्द[2] में अब ख़िल्द आशियां के लिये॥

छुरी वह लाये हैं आशिक़ के मुर्गे-जां के लिये।
ग़जब की शाख़ निकाली है आशियां के लिये॥

न उठे वह न सही देख तो लिया मुझको।
उठी निगाह तो ताज़ी में-मेहमां[3] के लिये॥

मैं हूं वह सोख्ता-जा[4] गर कहीं मिले बिजली।
समझ के जुगनू उठा लाऊं आशियां के लिये॥

ज़मीं से हम को ग़ुबार आसमान हम से ख़िलाफ़।
न हम ज़मीं के लिये न आसमां के लिये॥

दिल और तसव्वुरे-जानां में रब्त लाज़िम है।
मकां मकीं के लिये है मकीं मकां के लिये॥

शबाब आते ही आंधी की तरह दिल आया।
बहार आयी तो कुछ झोंके ख़िज़ा के लिये॥

"अमीर" नालां भी हो साथ-साथ अश्कों के।
जरस[5] भी शर्त सफ़र में है कारवां के लिये॥

* *

दैव का सुख 2. स्वर्ग 3. अतिथि सत्कार 4. दिलजला 5. घण्टा

आंख उसकी यह क्योंकर कहूँ मख़मूर[1] नहीं है।
हां कैफ़े-जवानी[2] से अभी चूर नहीं है॥

हर चंद बुतों से है बहुत दूर-तरहम[3]।
अल्लाह की क़ुदरत से मगर दूर नहीं है॥

है मय-कददे-दर्द में मस्तों का यही क़ौल[4]।
शीशा नहीं पत्थर है जो दिल चूर नहीं है॥

उस बाग़ से सौ दाग़ भले गुल न हों जिसमें।
जल जाये' वह फ़िरदौस[5] जहां दूर नहीं है॥

मुर्दा सा "अमीर" एक सरे-राह पड़ा था।
तेरा तो कहीं वह दिले-रंजूर[6] नहीं है॥

* *

1. नशे से भरा हुआ 2. जवानी का नशा 3. दया भाव 4. कथन
6. दुःख हृदय

जो मस्त होश में आने का क़स्द[1] करता है।
पुकारता है यह साक़ी कि होशियार हूं मैं॥

वह कुश्ता[2] हूँ कि मेरी लाश जिस तरफ़ गुज़री।
ज़मी पुकार उठी क़ाबिले-मज़ार हूँ मैं॥

हूज़ूर वस्ल की हसरत अज़ल से है मुझको।
ख़याल कीजिये कब से उम्मीदवार हूँ मैं॥

शबे-फ़िराक़ मेरी जान दिल से कहती है।
तड़प चुका हो अगर तू तो बेक़रार हूँ मैं॥

बलायें लेती हैं फिर-फिर के गर्द नौमीदी[3]।
यह किसके दर पे इलाही उम्मीदवार हूँ मैं॥

वह बेक़रार हूं मैं देखें अगर तड़प मेरी।
क़रार भी यह पुकारे की बेक़रार हूँ मैं॥

पुकारता है यह मूबाफ़ उसकी चोटी का।
कि सबसे पीछे हूं पर चोटी का सिंगार हूँ मै॥

बड़े मज़े से गुज़रती है बेखुदी में "अमीर"।
वह दिन खुदा न दिखाये कि होशियार हूँ मैं॥

* *

इरादा, निश्चय 2. मरा हुआ 3. निराशा की धूल

यह रोये वस्ल में मुँह रख के रूये-यार[1] पे हम।
कि ले गये - सब तक अब्रे - नौबहार पे हम॥

चमन में धूम है अब अपनी नग़मा-साज़ी[2] की
कि दो ही नालों में ग़ालिब[3] रहे हज़ार पे हम।

जो उनकी ज़ुल्फ़ में अफ़शां[4] तो अपने सीने में दाग़।
उधर बहार पे वह हैं, इधर बहार पे हम॥

जूनूं में पास यह पमाली[5] ज़ईफ़[6] का है।
ककि फूंक-फूंक के रखते हैं पांव ख़ार पे हम॥

हुयी है रात जो तकिये में फ़र्श क्या दरक़ार[7]।
"अमीर" लेट रहेंगे किसी मज़ार पे हम॥

* *

1. प्रिय का मुख 2. गायन 3. विजयी, प्रभुत्व 4. सिन्दूर 5. बर्बादी 6.
7. आवश्यक

दुख्ते-रज़[1] अटकी है साक़ी किसी दिवाने से।
कि परी बन के उड़ी जाती है पैमाने से॥

दाग़ पे दाग़ दिये जाता है दम ले ऐ चर्ख़[2]।
यह भी खा लूगां जो .फुर्सत हुई ग़म खाने से॥

बुत हरम में भी नहीं चैन से रहने देते।
रोज़ पैग़ाम चले आते है बुतख़ाने से॥

ख़ूब जी भरके तसव्वुर का तेरे मौक़ा है।
मैं बहुत खुश हूं शबे-हिज्र के बढ़ जाने से॥

तेरे दिवाने पे क्या जाने वहां क्या गुज़री।
आया सैलाब[3] जो रोता हुआ वीराने से॥

ज़िक्रे-हूं किस दिले-बहशी[4] ने किया है कि "अमीर'।
वही आवाज़ चली आती है वीराने से॥

* *

मदिरा, अगूंर-पुत्री 2. आकाश 3. बाढ़ 4. उन्मादित हृदय

जब तड़पता है दिल मैं डरता हूं।
चर्ख पर जा पड़े ज़मीं न कहीं॥

दिल में बातें थीं क्या-क्या कुछ।
हाय कुछ वक्ते वापसी[1] न कहीं॥

दिल सी शै लेकर अब तो निकले हैं।
पूछ लेगा कोई कहीं न कहीं॥

न तड़प इस .कदर दिले-बेताब[2]।
सहम जाये वह नाज़नीं न कहीं॥

आग हो जायेगा वह शोख़ "अमीर"।
खींचना आहे आतशीं[3] न कहीं॥

* *

1. लौट आने वाला समय 2. विचलित हृदय 3. गर्म आहें

इश्क़ में दिन ज़िन्दगी के भर चले।
मर के तुम पे जीते जी हम मर चले ॥

सई तो की वस्ल की हमने बहुत।
जब न कुछ क़ाबू चला तब मर चले ॥

पहुंचेंगे उस बज़्म में उश्शाक़[1] ही।
और यूं चलने को दुनिया भर चले ॥

बे मुरव्वत[2] आंख हो क्या सामने।
मय से हो ख़ाली तो क्या साग़र चले ॥

क़ूये-कातिल[3] में गुज़र आसां नहीं।
आदमी तलवार पर क्यों कर चले ॥

यह मिली किस जुर्म पर दम को सज़ा।
हुक्म है दिन भर चले शब भर चले ॥

जुर्म अपना मौज की तक़सीर[4] क्या।
क्यों हूबाब इतना उठा कर सर चले ॥

रहने क्या दुनिया में आये थे "अमीर"।
सैर कर ली और अपने घर चले ॥

* *

1. प्रेमीगण 2. बोलिहाज़ा, जिसकी आंख में लाज न हो 3. हत्यारे की गली 4. अपराध

उलझ पड़ूं किसी दामन से मैं वह ख़ार नही।
वह फूल है जो किसी के गले का हार नहीं॥

किसी शहीद का है रंगे-ख़ूं बहार नहीं।
किसी लहद पे चिरागां है लाला-ज़ार[1] नहीं॥

न दो रक़ीब[2] को तुम दाग़ अपनी उल्फ़त का।
ज़मीन शोर सज़ावार लाला-ज़ार नहीं॥

हमारी ख़ाक भी करती शिक़ायत उस बुत की।
ख़ुदा का शुक्र है गोया लबे-मज़ार नहीं॥

"अमीर" वस्ल में उस शोख़ ने तलब्बन[3] से।
हज़ार बार कही हां हज़ार बार नहीं॥

* *

1. लाल-लाल फूल 2. शत्रु, विपक्षी 3. खिसियाना

मै कभी वक़ा पे मक़तल[1] से न टल जाऊंगा।
कुछ जमाना नहीं करवट जो बदल जाऊंगा॥

लाघ दुनियां में फंसू चाल वह चल जाऊंगा।
कि मैं इस भूल-भुलैय्यां से निकल जाऊंगा॥

इस सरा में मैं मुसाफ़िर नहीं रहने आया।
रह गया थक के अगर आज तो कल जाऊंगा॥

मस्ती उन आंखों में आती है तो कहता है हिजाब[2]।
देख तू आई तो मैं घर से निकल जाऊँगा॥

देखने दे मुझे रूख़सार तेरा हर्ज़ है क्या।
दो घड़ी देख ले फूलों को बहल जाऊँगा॥

आतशे-इश्क़[3] मुझे हो गई गुलज़ारे-ख़लील[4]।
दिल में समझा था वह क़ाफ़िर कि जल जाऊँगा॥

क़ूये-जानां में यह कहता है मेरा दिल मुझसे।
तू उठाना मुझ मैं गिर के मचल जाऊँगा॥

वस्ल में उससे मेरा हौसला कहता है "अमीर"।
क्या में अरमाने-अदू[5] हूँ कि निकल जाऊँगा॥

* *

1. वक्षस्थल 2. परदा 3. प्रेमाग्नि 4. प्रिय की गली 5. शत्रु की इच्छा

किसी की चाह भी मेरे दिल में मेरे ऐ नाज़नी निकली
तेरे तीरों ने घर भर की तलाशी ली कहीं निकली।

तमन्ना कब तेरे उश्शाक़[1] की ऐ नाज़नीं निकली।
जले दिल से जो निकली भी तो आहें-आतशीं[2] निकली।

शरीके-हाल[3] आशिक़ बेकसी में कौन होता है।
जो निकली भी तो कुछ दिल सोज़ आहें-आतशीं निकली॥

इसी दिन के लिये आंखों में हमने तुझको पाला था
बड़ी तू बे-मुरब्बत[4] ऐ निगाहे-वापसीं[5] निकली॥

हुआ दीदार उसका ख्वा़ब में बातें तसव्वुर में।
कोई हसरत कहीं निकली कोई हसरत कहीं निकली॥

* *

1. प्रेमीगण 2. तपती हुई आह 3. दुःख का साथी 4. बेशर्म, निर्लज्ज 5. लौटती हुई दृष्टि

न सुन अय दर्दे-दिल मेरी न सुन।
मैं कहूँगा सुने वह न सुने॥

यूं वहाँ चल की पांवों की आहट।
पासबां[1] क्या नशेवां[2] न सुने॥

किसी नआशना[3] का क्या शिकवा।
आशना की जब आशना न सुने॥

जो किसी को भला बुरा न कहे।
वह किसी से भला बुसा न सुने॥

दिल जो कहता है बे असर है दवा।
दर्द कहता है चुप दवा न सुने॥

फूल आहिस्ता तोड़ अय गुलचीं।
फूल ज़ालिम कहीं सबा न सुने॥

जो कोई दर्द आशना हो "अमीर"।
इधर आये मेरा फ़साना सुने॥

* *

1. चौकीदार 2. पदचिह्न 3. अपरिचित

दिल जो कहता है मुझे ज़ब्त की ताक़त ही नहीं।
ज़ब्त कहता है तड़पने की इजाज़त ही नहीं॥

ग़म से छुटूं तो मैं कुछ ऐश के सामान करूं।
इतनी इस ग़म-कदये-दहर[1] में फ़ुर्सत ही नहीं॥

तलब जाम अबस[2] करते है मुहँ फोड़ के तुम।
मैकशी आँख में साक़ी के मुरव्वत[3] ही नहीं॥

हाथ में शाना[4] है आईना जानूं[5] पे मदाम[6]।
उनसे उल्फ़त है तुम्हें जिन में मुहब्बत ही नहीं॥

दीन की फ्रिक करूं ह्यय मैं किस वक्त "अमीर"।
कभी दुनियाँ के बखेड़ों से फ़राग़त[7] ही नहीं॥

* *

1. दुःखों का संसार 2. बेकार 3. झिझक 4, कंधा 5. जांघों में 6. सदैव 7. फ़ुरसत, छुटकार

गुलों से जाके मैंनें दाग़े-दिल अपने मिलाये थे।
नहीं शबनम पसीना आ गया है यह गुलिस्तां को॥

ख़ुदा ने हुस्न को तेरे अजब तासीर बख़्सी है।
यह न्यामत देखने से सैर कर देती है ज़िंदा[1] को॥

अजल आये कहीं पीरी[2] में हम इस दर्द से छूटें।
शिक़स्ता हाल अब देखा नहीं जाता है दंदा[3] को॥

मैं जब उठता हूं काँटे पाँव पड़-पड़ कर यह कहते है।
अजी बैठो भी क्यों वीरान करते हो बयाबां को॥

जब अगली सुहबतें याद आती हैं याराने-रफ्ता[4] को।
निकल कर घर से देख आता हूँ मैं गोरे-गरीबां[5] को॥

क़यामत से न दूं तशबीह[6] उसकी चाल को क्योकर।
उठा कर राह में चलते हैं फ़ितने जिसके दामां को॥

तसव्वुर क़ैद में है ऐ "अमीर" इक बुत की आंखों का।
परीख़ाना बना रखा है मैंने अपने ज़िंदा को॥

* *

1. बन्दीगृह 2. वृद्धावस्था 3. दांत 4. गुज़रे हुए मित्र 5. मरे हुए लोगों की क़ब्र 6. उपमा

वह आंखें देख कर आशिक़ को अपने फेर लेते हैं।
खुदा की शान रहज़न[1] भागते हैं दूर राही से॥

बहुत मुश्ताक़[2] हूँ दो बोल क़ाज़ी आके पढ़ जाये।
हुई है दुख़्ते-रज़[3] हुशियार अब फ़ज़्ले इलाही[4] से॥

वह मुजरिम हूं गुनह का उज़्[5] भी मैं कर नहीं सकता।
कि रहमत उसकी शरमाती है तेरी उज़्र ख्वाही से॥

मैं वह ग़ुरबत[6] जदा हूं मेरी ग़ुरबत जब से देखी है।
गले मिल-मिल के रहज़न रोते हैं एक-एक राही से॥

बयाबां मर्ग है अहले-वतन का शक गुज़रता है।
लिपटती है हमारी ख़ाक "अमीर" एक-एक राही से॥

* *

1. लुटेरा 2. इच्छुक 3. अगूंर की बेटी, मदिरा 4. ईश्वर की कृपा 5. प्रार्थना 6. परदेसी

तूर[1] पर ऐ तापिशे-दिल हैं वह आने वाले।
आज हम तुझ को हैं बिजली से लड़ाने वाले॥

देख कर चार तरफ़ अक्स वह अपना बोले।
क्यों मुझे घेरे हैं यह आइना-ख़ाना वाले॥

सौ अज़ीज आये मगर दो भी न निकले अफसोस।
चार आंसू मेरी तुरबत पे बहाने वाले॥

असमते-शर्म[2] से कहती है जवानी इनकी।
अब बिठायें इन्हें परदे में बिठाने वाले॥

ख़ाक रंज-ओ-ग़म अंदोह[3] से आबाद हो दिल।
है यह सब ख़ाना-ख़राबी के घराने वाले॥

अपने आइने से पूछते हैं कौन हो तुम।
मेरी तस्वीर को सीने से लगाने वाले॥

कैसी राहे-अदम आबाद हैं हमवार[4] "अमीर"।
चैन से सोते चले जाते हैं जाने वाले॥

* *

एक पवित्र पहाड़ का नाम 2. चरित्र की लाज 3. दुःख 4. बराबर, एक-सा

नहीं मुकिन रसीई[1] ला-मकां तक।
निशां किस तरह पहुंचे बे-निशां तक॥

तेरी सफ़ाक़ियां[2] पहुँची यहाँ तक।
कि डरती है हयाते-जाविदां[3] तक॥

करूं ज़ब्ते-नफ़स[4] हम दम कहाँ तक।
लगी है आग इक दिल से ज़ुबां तक॥

पहुँच जाये अगर मुझ सख्त जां तक।
तो मांगे मौत मर्गे-नागेहां[5] तक॥

मैं हूँ वह नातवां[6] जब आह खींची।
तो ठहरी सौ जगह दिल से ज़ुबा तक॥

कड़ी है इस क़दर मंज़िल अदम की।
कि मर-मर कर पहुँचते हैं वहां तक॥

मै हूँ इस अन्जुमन में शमए-तस्वीर।
कि सोज़े-दिल नहीं आता ज़ुबां तक॥

हज़ारों हसरतों का हो गया ख़ून।
कहां तक पासे-रूसवाई[7] कहां तक॥

* *

1. पहुंच 2. छेड़छाड़ 3. अनिश्चित जीवन तक 4. सांस को रोक लेना 5. [illegible] मृत्यु 6. दुर्बल, कमज़ोर 7. बदनामी का ख्याल

हुस्न मुतलफ़[1] का अजल के दिन से मैं दीवाना था।
ला-मकां[2] कहते हैं जिसको वह मेरा काशाना था॥

दिल का हाकिम जान का मालिक़ ग़मे-ज़नाना था।
मेहमां जिसको मैं समझा था वह साहब-ख़ाना था॥

बाग़े-आलम का तमाशा बायसे-ग़फ़लत[3] हुआ।
देखना आँखों का कानों के लिये अफ़साना था॥

इस क़दर उसके तस्सवुर ने सताया है मुझे।
शुबाह होता है कि हस्ती में कभी था या न था॥

गुल सरापा गोश[4] बनते क्यों न सुनने के लिये।
चहचहे बुलबुल के गुलशन में तेरी अफ़साना था॥

हम ग़लत-फ़हमी से समझे क़त्ल करने को अताब[5]।
और वहाँ इक छेड़ थी एक नाज़ माशुक़ाना था॥

बाज़ की महफ़िल में भी आये तो यू मुश्ताक़े-इश्क़[6]।
मय की बोतल थी बग़ल में हाथ में पैमाना था॥

वस्ल होता किस तरह ख़िलवत[7] कहां थी रात को।
फूल थे नरगिस के रखे शमा थी परवाना था॥

* *

श्वरीय सौन्दर्य 2. बेघर-बार 3. बेसुधी का कारण 4. सिर से पांव तक के
5. शीघ्रता 6. प्रेम के इच्छुक 7. एकान्त

हुबाब आसा[1] मुहीते-इशक़[2] से जो पार उतरते है।
गुज़र जाते हैं पहले सर से, पीछे पांव धरते है॥

पसंद आया उन्हें मुझको इसी का शुक्र क्या कम है।
कि शिकवा ले के बैठूं आप दिल लेकर मुकरते है॥

शबे-ग़म में रहे जीते बुरा हो सख्त जानी का।
न आई मौत, इस ग़ैरत के मारे हम तो मरते है॥

जवाब-आज़ा[3] हमें देते हैं क्यों ऐ ज़ौफ़[4] पीरी में।
जरानी की तो हम उनसे नहीं दरख्वास्त करते हैं॥

चमन की सैर ही छुटी तो फिर जीने से क्या हासिल।
गला काटे मेरा सैय्याद नाहक़ पर कतरते हैं॥

तसव्वुर[5] में भी मुहँ चूमूं तो उड़ जाता है रंग उनका।
बलायें-ख्वाब में भी लूं तो बाल उनके बिखरते हैं॥

बहुत संबुल[6] चमन में आज पेच-ओ-ताब खाता है।
किसी महबूब के शायद कहीं गेसू संवरते हैं॥

* *

1.बुलबुले की भांति 2. प्रेम का घेरा 3. शरीर के अंग 4. निर्बलता 5. स्वप्नविचार6. एक प्रकार की घास

हम लोटते हैं वह सो रहे हैं।
क्या नाज़-ओ-नयाज़[1] हो रहे हैं॥

क्या रंग ज़माने में हो रहे हैं।
दो हंसते हैं, चार रो रहे हैं॥

तनहा तहे-ख़ात[2] भी नहीं हम।
हसरत के साथ सो रहे हैं॥

पीरी में भी हम हज़ार अफ़सोस।
बचपन की नींद सो रहे हैं॥

मैं जाग रहा हूँ ऐ शबे-गम।
पर मेरे नसीब सो रहे हैं॥

आइने पे भी कड़ी निगाहें।
किस पर यह अताब[3] हो रहे हैं॥

दिल छीन के हो गये है ग़ाफ़िल[4]।
फ़ितने[5] वह जाग के सो रहे हैं॥

पूछे कोई दीदाहाये-तर[6] से।
क्यूं नामे-वफ़ा डुबो रहे हैं॥

* *

1. नम्र-नम्रता 2. मिट्टी तले 3. क्रोध 4. बेसुध 5. उपद्रव 6. भीगी आंखें

जो बूये-गुल चमन में ढूंढते हैं।
मुसाफ़िर को चमन में ढूढंते हैं॥

वह प्यासे हैं कि हम घबरा के पानी।
तेरे चाहे-ज़क़न[1] में ढूंढते हैं॥

पता पाते हैं यूसूफ़[2] का वही लोग।
जो अपने पैरहन[3] में ढूढंते हैं॥

हमें ऐ बाग़बां ग़ुंचों से क्या काम।
हम अपना दिल चमन में ढूढंते हैं॥

"अमीर" अहले-हसद[4] कब है हुनर में।
अयूब[5] अक्सर सुखुन में ढूढंते हैं॥

* *

1. कुएं के समान ठण्डी 2. अति सुन्दर व्यक्ति 3. लिबास 4. जलने-कुढ़... ल
5. ऐब, कमी, त्रुटि

मंगा कर आईना मुझ तिश्ना-लब को याद करते हैं।
वह साहिल को भी लेकर साथ दरिया में उतरते हैं॥

शहीदे-इश्क़ जी जाते हैं जी से क्या गुज़रते हैं।
खुदा यह मौत दे सबको हम इस मरने पे मरते हैं॥

मुकामें-शर्म[1] है हम हिज्र में जी से गुज़रते हैं।
पतंगे भी तो रूख़सत शमा से हो होके मरते हैं॥

यहां आँखों में दम है अब कोई साअत[2] में मरते हैं।
क़ज़ा[3] कहती है जल्दी क्या हैं, आयेंगे सवरंते हैं॥

रहे बेदार दिल जो उम्र भर मुर्दा न जान उनको।
बराबर रात दिन जागे थे अब आराम करते हैं॥

ख़िज़ां ग़ाफ़िल[4] नहीं है ऐ जवानाने चमन तुमसे।
नहीं उड़ते हैं पत्ते यह उसे परचे गुज़रते हैं॥

तफ़ावत[5] इस क़दर है ज़ाहिदों में और रिंदों में।
कि वद कुछ दिल में ले रहते हैं यह सब कह गुज़रते हैं॥

नये गुल फूलते हैं अपनी आहें-सर्द से हर दम।
जिगर के दाग़ दिल की चोट बन-बन कर उभरते है॥

* *

...ज्जावस्था 2. समय 3. मृत्यु 4. बेसुध 5. अंतर

रंग आज तो फूलों का सबा और ही कुछ है।
आमद है जो उस गुल की हवा और ही कुछ है॥

आग़ाज़े-जवानी में अदा और ही कुछ है।
उठती हुई कोपल में मज़ा और ही कुछ है॥

चेहरे को भी छिपाये वह बदन को भी चुरायें।
आंखें यही कहती हैं हया और ही कुछ है॥

आरिफ़[1] से यह कह दो जो तेरे फ़हम[2] में आये।
वर सब है तेरा वहमे-खुदा और ही कुछ है॥

की उसकी जफ़ा पर जो वफ़ा तूने तो ऐ दिल।
नाज़ां[3] न हो उस पर कि वफ़ा और ही कुछ है॥

कहते हो कि हम दर्द किसी का नहीं सुनते।
मैंने तो रक़ीबों[4] से सुना और ही कुछ है॥

बेदर्द की फ़रियाद को कोई नहीं सुनता।
जिस पर है असरे-ग़म वह दुआ और ही कुछ है॥

क्या ख़ाक है बीमारे-मुहब्बत को इफ़ाका[5]।
दर्द और ही कुछ और दवा और ही कुछ है॥

* *

1. फ़क़ीर, तुच्छ 2.समझ 3. घमण्डी 4. प्रतिद्वन्दी 5. कमी

बांकी अदा है व निगहे-ख़श्मगी[1] नहीं।
ग़मज़ा[2] छुरी लिये है वह चीने-जबीं[3] नहीं॥

ख़िलवत में बेख़ुदी से पता ही कहां नहीं।
क्या सैर है यहां कि हमीं हैं हमी नहीं॥

अस्मत यह दस्ते-शौक़ से कहती है रोज़े-वस्ल[4]।
छू जाय जिसको हाथ यह वह आस्ती नहीं॥

पैकाने-तीरे-यार[5] से कहती हैं हसरतें।
तू दिल-नवाज़ तो है मगर दिल नशीं नहीं॥

जिस बेनिशां को ढूढंते हैं हम जहान में।
कहता है दिल कि मैं नहीं तो तू कहीं नहीं॥

* *

1. क्रुद्ध दृष्टि 2. नख़रे 3. कुढ़ जाना 4. मिलन के दिन 5. प्रिय के तीरों की नोंक

दूसरा कौन है जहां में तू है।
कौन जानें तुझे कहां तू है॥

लाख परदों में तू है बे-परदा।
सौ निशानों में बे-निशां तू है॥

तू है ख़िलवत[1] में तू है ज़िलवत[2] में।
कहीं पिन्हां कहीं अयां तू है॥

नहीं तेरे सिवा यहां कोई।
मेज़बां तू है, मेहमां तू है॥

जिस्म कहता है, जान है तू ही।
जान कहती है जाने-जां तू है॥

न मकां, ला मकां में कुछ।
जलवां-फ़रमां[3] यहां वहां तू है॥

रंग तेरा चमन में बू तेरी।
ख़ूब देखा तो बाग़बां तू है॥

मुहरमें-राज़[4] तो बहुत है "अमीर"।
जिसको कहते है राज़दां तू है॥

* *

1. एकान्त 2 . भीड़ 3. विराजमान 4. भेद जानने वाला

उम्र बर्क़-ओ-शरार है दुनिया।
कितनी बे ऐतवार है दुनिया॥

दाग़ से कोई दिल नहीं ख़ाली।
क्यां कोई लाला-ज़ार[1] है दुनिया॥

हर जगह जंग हर जगह है निज़ाअ।
अर्सये - क़ारज़ार[2] है दुनिया॥

नशये - ऐश यां नसीब किसे।
कि सरापा[3] खुमार है दुनिया॥

यार-बासी का शौक़ है इसको।
यार लोगों की यार है दुनिया॥

अहले-रग़बत[4] से करती है नफ़रत।
बड़ी परहेज़गार है दुनिया॥

अपने मस्तों से भागती है मदाम।
किस क़दर होशियार है दुनिया॥

एक झोंके में है इधर से उधर।
चार-दिन की बहार है दुनिया॥

* *

1. फूलों का बाग़ 2. लड़ाई का मैदान 3. सर से पांव तक 4. पसन्द करने वाले

दिखला के इक झलक जो वह रूपोश[1] हो गये।
क्या-क्या ख़्यालो-ख़्वाब फ़रामोश[2] हो गये॥

हिर्से-शराब[3] ने हमें बदनाम कर दिया।
चट करके इस बला को बलानोश हो गये॥

बैठे हम उनके पास तक़ल्लुफ़ उठा दिया।
हम दोश होते-होते हम आग़ोश हो गये॥

याद आ गये मज़े जो पसे-मर्ग[4] वस्ल के।
तुरबत के ग़ोसे हूरों के आग़ोश हो गये॥

मैं हूँ वह अंदलीब[5] हुआ जब तरानासंज[6]।
जितने खिले थे गुल हमातन-गोश[7] हो गये॥

क्या जाने क्या ख़याल शबो-वस्ल बंध गया।
बातें जो करते-करते वह ख़ामोश हो गये॥

दफ़तर गिरा इधर तो उधर कातिबे - अमल।
तड़पे हम इस क़दर कि सुबुक-दोश हो गये॥

अफ़सुर्दो-दाग़[8] दिल हुए पीरी में क्या "अमीर"।
गोया चिराग़ सुबह को ख़ामोश हो गये॥

* *

1. छिप जाना 2. भूल जाना 3. मदिरा का लालच 4. मरणोपरान्त 5. गा
गोद मे रहना 7. कर्मों-लेखन 8. मुरझाए हुए दाग़

वह शोख़ लाख परदों में परदा-नशीं नहीं।
और फिर जो देखिये तो कहीं है, कहीं नहीं॥

ऐसा ही जोशे-गिरिया[1] है तो हिज्रे-यार में।
या हम नहीं, ज़मी पे या यह ज़मीं नहीं॥

तू क़ाबिले-सजूद[2] है ऐ मेरे बे-नयाज़[3]।
पर क़ाबिले-सजूद किसी की जबीं नहीं॥

शोख़ी का हाथ उठके पकड़ ले शबे-बिसाल।
इतनी सी काम की निगहे शर्मगीं[4] नहीं॥

वाअज़ को तुम तो देखते ही हंस पड़े "अमीर"।
बातें तो इन बुज़ुर्ग की तुमने सुनी नहीं॥

* *

1. रोने का जोश 2. सर झुकाने योग्य 3. जिसका किसी से नाता न हो 4. शर्म से डूबी आंखे

चले साक़ी, हंसे बोले अगर आई है यारों में।
दुल्हन बन कर बैठे दुख्ते-रज़[1] बादा ख्वारों में॥

बहार आई लुढ़ाती खुम के खुम हम बादा ख्वारों में।
कहो तोबा से चन्दे जा रहे परहेज़गारों में॥

शबे-फ़ुर्क़त सिमट कर मेरे घर में आ रही शायद।
स्याही जिस कदर थी गिब्र-ओ-तरसा[2] के मज़ारों में॥

न निकले आरज़ूए-वस्ल कुछ तो दिल को तस्कीं[3] हो।
यही सुन लूं की मेरा नाम है उम्मीदवारों में॥

इधर दिल लौटता है उस तरफ़ बिजली तड़पती है।
इलाही ख़ैर हो बहस आ पड़ी दो बेक़रारों में॥

दमे-ज़ीनत[4] यह है बिस्वास[5] उनको बदग़ुमानी से।
किसी की रूह मिस्ले-बू नहीं फूलों के हारों में॥

शिगूफ़ कोई फूलेगा यह सुहबत रंग लायेगी।
"अमीर" अच्छा नहीं है बैठना इन गुलज़ारों में॥

* *

1. अंगूर की बेटी, मदिरा 2. विभिन्न धर्मावलम्बी 3. आराम 4. सजावट के स
5. यक़ीन, विश्वास 6. फूल जैसे गालो वालें

आंख उसको खोलनी भी दश्वार हो गई है।
पहले चमन में नरगिस[1] बीमार हो गई है॥

हम तुम चमन में जाकर जब चार दिन रहें हैं।
बुलबुल में और गुंल में तक़रार[2] होगई है॥

सबकी नज़र में है वह गो दिल में है हमारे।
ख़िलवत[3] की कोठरी कभी बाज़ार हो गई है॥

कुछ फ़िक्र दुख्ते-रज़[4] की पीरे-मुग़ां[5] है लाज़िम।
बेहोश अब नहीं है हुशियार हो गई है॥

अंगूर में थी यह मय पानी की चार बूंदे।
जिस दिन से खिंच गई है तलवार हो गई है॥

इक बात सहल सी है मंर्गे-ए "अमीर" लेकिन।
दुश्वार समझे हैं शब, दुश्वार हो गई है॥

* *

1. एक फूल विशेष का नाम 2. झगड़ा 3. एकान्त 4. अंगूर की बेटी, मदिरा 5. मदिरालय का वृद्ध

दिखला रहा है सैर मेरा दाग़ दार दिल।
पाया ख़िज़ां से मैनें यह बाग़ों-बहार दिल॥

तिरछी नज़र निशाने पे पड़ती नहीं कभी।
ऐ तुर्क़[1] इस अदा से न होगा शिकार दिल॥

काम आयेगा ज़रूर किसी दिन हुज़ूर से।
पहलू में अपना रखते हैं हम होनहार दिल॥

देखी वह चश्मे-मस्त तो आँखें सी खुल गईं।
जब होश उड़ गये तो हुआ होशियार दिल॥

आया ख़याल कुश्तये-सीमाब[2] देख कर।
यह ख़ाक़ हो गया है कोई बेक़रार दिल॥

आते हैं फातहे[3] के लिये रोज़ दर्द-ओ-ग़म।
है आरज़ू-ऐ-मुर्दा का गोया मज़ार दिल॥

ख़ाक़ भी आरज़ूये-वस्ल करूं अब तक ऐ "अमीर"।
यह भी ख़बर नहीं किसे करता है प्यार दिल॥

* *

1. शत्रु 2. पारे की गरमी 3. प्रार्थना

निकल जाते हैं वह जिस राह से बेचेन करते हैं।
हज़ारों चुटकियां लेते हैं जिस दिल में गुज़रते हैं॥

लबों पर आके हिज्रे-यार में दम ज़ब्त से बोला।
संलामत बेक़रारी हम कहीं घुट-घुट के मरते हैं॥

लिया तो मैंने कबोसा ख़ंजरे-क़ातिल[1] का मक़तल[2] में।
अजल शर्मा गई समझी कि मुझको प्यार करते हैं॥

बरंगे-नब्ज़ चलने से है अपने दस्त-ओ-पा[3] चलते।
ठहर जाता है सारा क़ाफ़ला जब हम ठहरते हैं॥

बरी है पाक-बाज़ाने-मुहब्बत[4] रश्क़ से देखों।
जो तुमको प्यार करते हैं हम उनको प्यार करते हैं॥

* *

त्यारे का छुरा 2. वक्षस्थल 3. हाथ और-पैर 4. प्रेम की पवित्र लड़ाई

दिल को अब कब क़रार आता है।
सुन लिया है कि यार आता है॥

दर्दे-दिल में मेरी तसल्ली को।
गिरिया[1] बे-अंख्तियार आता है॥

तुमको आता है प्यार पे गुस्सा।
मुझको गुस्से पे प्यार आता है॥

चैन आता नहीं मज़ार पर आज।
कौन सूये-मज़ार[2] आता है॥

ज़िन्दगी में कभी न आ निकला।
मर गये पर क़रार आता है॥

बेक़रारी का घर है दिल मेरा।
तू कहां ऐ क़रार आता है॥

जो. शिक़वा[3] मेरी ज़ुबां पे "अमीर"।
शुक्र बे-आख्तियार आता है॥

* *

1. रूदन 2. क़ब्र की ओर 3. शिक़ायत के स्थान पर

दरे-करीम[1] पे महशर में ताकि राह मिले।
गुनाहगारों में छुप-छुप के बेगुनाह मिले॥

फ़ना जो क़ब्ले-फ़ना[2] हो बक़ा[3] की राह मिले।
यह किला वह है जहां मौत से पनाह मिले॥

बिसाले-मरतबये-इंतेहा[4] है आशिक़ को।
गुहर न हाथ लगे जब तलक न थाह मिले॥

हुजूमें-यास से क़ालिब[5] में रूह ठहरी है।
छटें यह भीड़ तो इस राहरू को राह मिले॥

जो वह स्पिर[6] हो तो मिज़गां-ओ-मर्दुमक[7] की तरह।
हज़ार तीरों में इंसान को पनाह मिले॥

हम इस उम्मीद पे महशर से ख़िलद[8] को पहुंचे।
कि शायद आगे तेरे घर की हम को राह मिले॥

* *

1. ईश्वरीय द्वार 2. मिटने से पूर्व 3. अमरत्व 4. चरम सीमा 5. शरीर 6. ढाल
7. पलकें व पुतलियां 8. स्वर्ग

मेरे बस में या तो यारब वह सितमशार[1] होता।
यह न था तो काश दिल पर मुझे अख़्तियार होता॥

पसे-मर्ग काश यूं ही मुझे वस्ले-यार होता।
वह सरे-मज़ार[2] होता मैं तहे-मज़ार[3] होता॥

तेरा मैक़दा सलामत तेरे खुम की ख़ैर साक़ी।
मेरा नशा क्यों उतरता मुझे क्यों खुमार होता॥

मेरे इत्तक़ा[4] का बाअस[5] तू है मेरी नातवानी[6]।
जो मैं तोबा तोड़ सकता तो शराब ख्वार होता॥

मैं हूं नामुराद ऐसा कि बिलख के यार रोती।
कहीं पा के आसरा कुछ उम्मीदवार होता॥

नहीं पूछता है मुझको कोई फूल इस चमन में।
दिले-बाग़ दार होता तो गले का हाल होता॥

वह मज़ा दिया तड़पने कि यह आरज़ू है यारब।
मेरे दोनों पहलुओं में दिले-बेक़रार होता॥

मैं ज़ुबां से तुझको सच्चा कहो लाख बार कहदूं।
इसे क्या करूं कि दिल को नहीं एतबार होता॥

* *

1. निष्ठुर 2. क़ब्र के ऊपर 3. क़ब्र के नीचे 4. मज़बूरी 5. कारण 6. कमज़ोरी

मेरा ज़ब्त कहता है मुझसे की कहदो।
उठे दर्द हम दिल संभाले हुए है॥

इधर ज़ोफ़[1] उधर ज़ब्त, तड़पूं मैं क्योंकर।
यह शाहज़ोर दोनों सम्भाले हुए हैं॥

चमन में यह क्या फूलों ने गुल खिलाया।
कि बुलबुल को जीने के लाले हुए हैं॥

ज़िगर दिल को दिल रोकता है जिगर को।
यह बिसमिल[2] को बिसमिल संभाले हुए हैं॥

"अमीर" उनसे क्या-क्या लुपटते हैं शब भर।
रक़ाबत[3] में एकता दो शाले हुए हैं॥

* *

निर्बलता 2. घायल 3. प्रतिद्वन्द्विता

रूबरू आइने के तू जो मेरी जां होगा।
आईना इक तरफ़ अक्स भी हैरां होगा॥

रंग अख़फ़ाये-मुहब्बत[1] जो नुभायां[2] होगा।
दर्द पहलू की तरफ़ दाग़ जो भी पिनहां होगा॥

ऐ जवानी यह तेरे दम के हैं सारे झगड़े।
तू न होगी तो न यह दिल न यह अरमां होगा॥

ज़ुल्फ़ शाने से यह कहती है न सर चढ़ इतना।
पेच कुछ ऐसे पड़ेंगे कि परेशां होगा॥

आग दिल में जो लगी थी वह बुझाई न गई।
और क्या तुझसे फिर ऐ दीदये-गिरियां[3] होगा॥

रात दिन गेसुए-महबूब का रहता है ख्याल।
ख्वाब आँखों में मेरे आके परेशां होगा॥

और बड़ जायेगा दीदार से शौक़े-दीदार।
यह वह न्यामत है कि सै इससे न मेहमां होगा॥

अपने मरने का तो कुछ ग़म नहीं यह ग़म है "अमीर"।
चारागर[4] मुफ्त में बेचारा पशेमां होगा॥

* *

1. प्रेम छिपाने की दशा 2. प्रकट 3. रोती हुई आंख 4. चिकित्सक

फ़रामोशी[1] जो उनकी है तो हम भी टाल जाएंगे।
ख़ता साबित करे कौन अपने जिम्मा उज्र ख्वाही से॥

ख़ुदा से डर न कर अंधेर ऐ बख़्ते-सियह[2] इतना।
दबे जाते हैं गेसुये-बुता[3] तेरी सियांही से॥

ज़बाले-हुस्न[4] है अब क्यों तुम्हारे गिर्द हैं आशिक।
कहो रूख़सत हों परवाने चिराग़े-सुबह-गाही[5] से॥

कहां है मुज़तरिब[6] हमसे जहां में बारहा हमने।
तड़पना-लोटना छुड़वादिया है बर्क़-ओ-माही से॥

हमारे दिल का आईना सरे-महफ़िल तो पहुंचा है।
ज्यादा अब है बेताबी तो उनकी कम निगाही से॥

'अमीर' अब जल्द हस्ती से चलो सूये-अदम[7] उठो।
न मानेगी अज़ल कुछ फ़ायदा क्या उज़्र ख्वाही से॥

* *

1. तिरस्कार करना 2. दुभार्ग्य 3. प्रिय के बाल 4. सौन्दर्य का पतन 5. प्रातः कालीन दिया 6. बेचैन 6. मानव की ओर

यह सब ज़हूरे-शाने-हक़ीक़त[1] बशर में है।
जो कुछ निहां था तुख्म[2] में पैदा शजर[3] में है॥

वासिल[4] समझिये उसको जो सालिक[5] है इश्क़ में।
मंज़िल पें जानिये उसे जो रह गुज़र में है॥

करते हैं इस तरीक़े से तै हम रहे-सलूक़।
सर उसके आस्तां पे .क़दम रह गुज़र में हैं॥

पहलू में मेरे दिल को न ऐ दर्द कर तलाश।
मुद्दत हुई तबाही का मारा सफ़र में है॥

हो दर्दे-इश्क़ एक जगह तो दवा करूं।
दिल में, जिगर में, सीने में, पहलू में, सर में हैं॥

सैय्याद से सवाल रिहाई का क्या करूं।
उड़ने का हौसला ही नहीं बाल-ओ-पर में है॥

ख़ंजर चले किसी पे तड़पते हैं हम "अमीर"।
सारे जहां का दर्द हमारे दिगर में हैं॥

* *

1. ईश्वरीय महिमा का स्पष्टीकरण 2. बीज 3. पेड़ 4. पहुंचा हुआ 5. [illegible]

यह सब ज़हूरे-शाने-हक़ीक़त[1] बशर में है।
जो कुछ निहां था तुख़्म[2] में पैदा शजर[3] में है॥

वासिल[4] समझिये उसको जो सालिक[5] है इश्क़ में।
मंज़िल पें जानिये उसे जो रह गुज़र में है॥

करते हैं इस तरीक़े से तै हम रहे-सलूक़।
सर उसके आस्तां पे .कदम रह गुज़र में हैं॥

पहलू में मेरे दिल को न ऐ दर्द कर तलाश।
मुद्दत हुई तबाही का मारा सफ़र में है॥

हो दर्दे-इश्क़ एक जगह तो दवा करूं।
दिल में, जिगर में, सीने में, पहलू में, सर में हैं॥

सैय्याद से सवाल रिहाई का क्या करूं।
उड़ने का हौसला ही नहीं बाल-ओ-पर में है॥

ख़ंजर चले किसी पे तड़पते हैं हम "अमीर"।
सारे जहां का दर्द हमारे दिगर में हैं॥

* *

1. ईश्वरीय महिमा का स्पष्टीकरण 2. बीज 3. पेड़ 4. पहुंचा हुआ 5. सम्पूर्ण

शिक़वा जफ़ा का तुमसे कुछ ऐ नाजनीं नहीं।
ऐसे ही तुम में होते हैं सब इक तुम्हीं नहीं॥

गुज़रा हुआ ज़माना फिर आता नहीं कभी।
वह कौनसा है दंम जो दमें-वापसी[1] नहीं॥

तड़पा रहा है उठके मेरे दिल को दर्दे-इश्क़।
तुझसे मिला हुआ तो मेरा हम-नशीं नहीं॥

अल्लाह रे नाज़ देख के कहते हैं आईना।
हम नाज़नीं नहीं तो कोई नाज़नीं नहीं॥

चौखट से तेरे सर न हटेगा "अमीर" का।
सिजदे से गिर के उठे यह ऐसी जबीं[2] नहीं॥

* *

1. लौटने वालो की सांस 2. मत्था

क्या कहा दम भी न निकलेगा जो उल्फ़त होगी।
जान भी क्या कोई ज़ालिम तेरी हसरत होगी॥

आरज़ू वस्ल की इस डर से नहीं कर सकता।
दिल शिक़स्ता मेरे हमदम तेरी .फ़ुर्क़त[1] होगी॥

बे सबब दिल नहीं बेचैन हुआ जाता है।
चुटकियां लेती किसी की कोई हसरत होगी॥

दिल को दे जायेगी तसकीन किसी की तस्वीर।
जान बचने की यही हिज्र में सूरत होगी॥

मस्तियां वस्ल में अस्मत[2] को तो समझा लेंगी।
न टलेगी मेरी दुस्मन जो नज़ाकत होगी॥

जीते जी वह न हुआ साफ़ तो समझा मैं "अमीर"।
मिट्टी देने के लिये गर्द क़दूरत[3] होगा॥

* *

1. विरह 2. प्रतिष्ठा, चरित्र 3. विद्वेश

हैं तग़ाफ़ुल[1] में भी सरगर्में-सितम[2] वह आंखे।
आप तो सोते हैं फ़ितनों को जगा रखा है॥

देखना सुबह को अंजाम जो होगा ऐ रामा।
तूने सर पर तो पतंगों को चढ़ा रखा है॥

हम चले देर से काबे को तो वह बुत बोला।
जाके ले लीजिये काबे में खुदा रखा है॥

बेखुदी नक़्शे-खुदी[3] हम से नहीं मिट सकता।
तू मिटाने पे जो आये तो मिटा रखा है॥

हश्र पर क़ामते-जानां[4] का है जलवा मौकूफ़[5]।
इस क़यामत को क़यामत पे उठा रखा है॥

जान भी हिज्र में दे देते हैं मगर हमने "अमीर"।
किसी मौक़ा के लिये इसको लगा रखा है॥

* *

1. बेसुधी 2. अत्याचार करने में व्यस्त 3. घमण्डता के चिन्ह् 4. प्रिय का क़द 5. निर्भर

देख सकते नहीं प्यासा मेरे आंसू मुझको।
रोज़ दे जाते हैं पानी कई चुल्लू मुझको॥

सुरमगीं[1] आँखे जो आइने में देखी तो कहा।
घूरते हैं यह जगाये हुये जादू मुझको॥

हूँ वह बुलबुल कभी सैय्याद[2] को आया जो तरस।
फूलों में छोड़ दिया तोड़ के बाज़ू मुझको॥

मेरे पहलू में तेरी तरह वह जम कर बैठें।
दर्दे-दिल ऐसा बता दे कोई पहलू मुझको॥

मैं जहां बैठ कर रोता हूँ हंसी होती है।
हर जगह करते हैं रूसवा[3] मेरे आँसू मुझको॥

कौन पहुँचाये मुझे कूचये-जानां[4] में "अमीर"।
ले चलें काश बहा कर मेरे आँसू मुझको॥

* *

1. सुरमा लगी 2. शिकारी 3. बेइज़्ज़त, बदनाम 4. प्रिय की गली

सब को तेरी पसंद है ऐ माहरू-पसन्द[1]।
आलम पसंद वह है करे जिसको तू पसन्द॥

एहसां किसी का कब है गवारा बरंगे-गुल।
है चाक पैरहन[2] नही लेकिंन रफ़ू पसन्द॥

पैदा किया है हुस्नने दौलत का ख़ासा[3]।
वह कौन है जहां में नहीं जिसको तू पसन्द॥

सब आफ़तों से छूट गया करके तर्के-हिर्स[4]।
क्योंकर न हो मुझे दिले-बे-आरज़ू पसन्द॥

दिन रात ज़िक्र शेर-ओ-सुखुन से है काम "अमीर"।
बातें यही पसन्द यहीं गुफ्तगु[5] पसन्द॥

* *

1. चन्द्रमुखी 2. लिबास 3. विशेषता 4. लालच का त्याग 5. वार्तालाप

कह रही है हश्र में वह आँख शरमाई हुई।
हाय कैसी इस भरी महफ़िल में रूसवाई हुई॥

ठोकरें खिलवायेगी यह चाल इठलाई हुई।
क्या जवानी फिरती है जौबन पे इतराई हुई॥

आईना[1] में हर अदा को देख कर कहते हैं वो।
आज देखा चाहिए किस-किस की है आई हुई॥

कह तो अय गुलचीं असीराने-कफ़स[2] के वास्ते।
तोड़ लूं मैं भी दो चार कलियां मुरझाई हुई॥

मैं तो राज़े-दिल छुपाऊं पर छिपा रहने भी दे।
जान की दुश्मन यह ज़ालिम आंख ललचाई हुई॥

मौत आई रूह जाती है करे कौन एहतमाम[3]।
इक निगाहें-वापसी[4] फिरती है घबराई हुई॥

वस्ल में ख़ाली हुई अग़ियार[5] से महफ़िल तो क्या।
शर्म भी आये तो समझूं मैं कि तनहाई हुई॥

क्या फले-फूलेंगी उम्मीदें दिले-पुर आरज़ू[6]।
यास के दामन में है यह परवरिश पाई हुई॥

* *

1. आरसी 2. पिंजड़े के बन्दी 3. प्रबंध 4. उलटती हुई दृष्टि 5. दुश्मन, विपक्षी 6. इच्छा

घटा की सैर हुज्रे से निकल कर देख लो ज़ाहिद।
बहाने को यह चोटी हूर ने जन्नत में खोली है॥

सुराही दौर में आती है ज़ाहिद[1] हों जो महफ़िल में।
झुकाले अंपनी आँखें दुख़तरे-रज[2] की यह डोली है॥

जगाती है यह कह कर सुबह पीरी चश्में-ग़ाफ़िल[3] को।
बस उठ सो नींद की माती कि शब भर खूब सोली है॥

वो कहते हैं कि हम आंखों में सबको तोड़ लेते हैं।
मोहब्बत सारी दुनियां की इसी कांटे में तोली है॥

अजब नागिन है ज़ुल्फ उसकी कि जिस महफ़िल में खोली है।
वहां से जो चला है उठके उसके साथ होली है॥

"अमीर" इस बेवफ़ा दुनिया की सूरत पर न तुम जाओ।
बड़ी अय्यार[4] है, मक्कार है ज़ाहिर में भोली है॥

* *

1. उपदेशक 2. अंगूर की बेटी, मदिरा 3. बेसुध आंखे 4. धोखेबाज़

बुत बने बैठे हैं कुछ बात बताते भी नहीं।
और यह ग़ुस्सा कि मैं रूठा तो मनाते भी नहीं॥

कुछ वफ़ा, कुछ है हया[1], जान है किस मुश्किल में।
दिल से जाते भी नहीं आँखों में आते भी नहीं॥

रूठना रोज़ का ठहरा है तो यह सुन रखिये।
रोज़ के रूठने वाले को मनाते भी नहीं॥

आगे आइने के बैठे हैं .झुका कर आँखें।
चोट खाते भी नहीं चोट लगाते भी नहीं॥

उन निगाहों से जवानी में हया कहती है।
जाओ अब परदे में हम तुमको बिठाते भी नहीं॥

लुत्फ़ मरने का दिखाये किसे फ़ुर्कत[2] में "अमीर"।
नहीं आते वह तो हम जान से जाते भी नहीं॥

* *

1. शर्म, लाज 2. विरह, बिछोह

जिगर से उठते हैं शोले कि दिल से ऐ हमदम।
किधर यह आग लगी है ज़रा ख़बर लेना॥

यह मुझको देख के पलकों को हुक्म अब्रू[1] है।
बचे जो तेग़ से तुम बछियों पे घर लेना॥

क़बाब सेख़ की गर्दिश से कम नहीं ऐ दिल।
शबे-फ़िराक़[2] में करवट इधर-उधर लेना॥

शहीदे-नाज़[3] का ताबूत[4] उठा तो फ़रमाया।
बरात जाती है किसकी ज़रा ख़बर लेना॥

"अमीर" जाते हो बुत-ख़ाने की ज़यारत[5] को।
पड़ेगा राह में क़ाबा सलाम कर लेना॥

* *

1. भौं, भवें 2. विरह की रात 3. अदाओं का मारा 4. अर्थी 5. दर्शन

अल्ला री लाग़री[1] कि तेरी जलवा गाह में।
पिस-पिस गया हूँ दब के मैं गर्दे-निगाह में॥

दिल है तबाह क़ाफ़लये-अश्क-ओ-आह में।
घेरा है आंधी-पानी ने बेकस को राह में॥

भागा ख्याले-यार यह कह कर शबे-फ़िराक़।
दुश्मन मेरे शरीक़ हो हाले तबाह में॥

महशर-ख़राम[2] तुम जो नहीं हो तो कौन है।
फ़ितनों[3] के फेरे किसने बनाये हैं राह में॥

तेरी नुकीली पलकों से अल्लाह की पनाह।
क्या दिल में पैठ जाती है छुप कर निगाह में॥

क़ालिब को भी क़याम[4] नहीं रूह की तरह।
मंज़िल चली है साथ मुसाफ़िर की राह में॥

हम है सियाह कार[5] तो रहमत है पर्दापोश।
मय पीते हैं तो सायाये-अब्रे-सियाह[6] में॥

अल्लाह रे रश्क जमा नहीं होते दो हमीं।
रोज़े-अज़ल[7] से फूट है खुरशीद-ओ-माह में॥

* *

1. निर्बलता 2. प्रलंयकारी चाल 3. उपद्रव 4. ठहराव 5. पापी, दुष्ट 6. काले बादलों की छांव 7. प्रारम्भ से

जितनी कमी कि नामा-स्याही में रह गई।
उतनी ही देर उफ़ूये-इलाही[1] में रह गई॥

हसरत नहीं वतन की तबाही में रह गई।
कुछ गर्द थी कि दामने-राही में रह गई॥

सद शुक्र उफ़ू मेरे गुनाह हश्र में दुये।
हुरमत गदा[2] की मजलिसे-शाही में रह गई॥

आँखे उसने फेर लीं तो फिर कहां हमारी जीस्त।
आधी तो जान नीम-निगाही में रह गई॥

थी ज़ार क़ूये-यार में क्या जाती अपनी ख़ाक।
इतनी थी कम की उड़ के हवा ही में रह गई॥

दी भी तो क़दे-यार को तूबा[3] से दी मिसाल।
पस्ती मेरी बुलन्द निगाही में रह गई॥

डूबे हुये नसीब न उछले किसी तरह।
क़श्ती उभर-उभर के तबाही में रह गई।

उम्मीद नाखुदा की कहां बहरे-इश्क़[4] में।
हां इक ख़ुदा की आस तबाही में रह गई॥

* *

1. ईश्वरीयक्षमा 2. प्रतिष्ठित फ़क़ीर 3. एक ऊंचा पेड़ 4. प्रेम सागर

दिल जुदा, माल जुदा, जान जुदा लेते हैं।
अपने सब काम बिगड़ कर वह बना लेते हैं॥

म्यान से लेते हैं जब क़त्ल को मेरे तलवार।
अपनी चालें उसे पहले वह सिखा लेते हैं॥

मजलिशे-वाअज़[1] में जब बैठते हैं हम मैकश।
दुख्ते-रज़[2] को भी पहलू में बिठा लेते हैं॥

दर्द-आगोंह[3] जो कोई दिल नज़र आता है कहीं।
दौड़ कर हम उसे छाती से लगा लेते हैं॥

जी अकेले शबे-फ़ुर्क़त में जो घबराता है।
फ़ितनये-हश्र[4] को नालो से जगा लेते हैं॥

ध्यान में लाके तेरा सिलसिलये-जुल्फ़े-दराज़।
हम शबे-हिज्र को कुछ और बढ़ा लेते हैं॥

हो ही रहता है किसी बुत का नज़ारा ता-शाम।
सुबह को उठ के जो हम नामे-ख़ुदा लेते हैं॥

जा चुका काफ़ला मुल्के-अदम दूर तो क्या।
हम भी दम भर में ख़ुदा चाहे तो दम लेते हैं॥

* *

1. उपदेशकों की सभा 2. अंगूर की बेटी, मदिरा 3. दर्द से भरा हुआ 4. प्रलयावसर का उपद्रव

परवानें क्यों न ख़ाक हो जलकर चिराग़ में।
जलवा उसी के नूर का है हर चिराग़ में॥

लाले[1] में तुम हो गुल में तुम महर-ओ-माह[2] में तुम।
जलवा तुम्हारे चेहरे का है हर चिराग़ में॥

आशिक़ है गोशागीर[3] नहीं कूचा गर्द[4] हम।
परवाने चलते-फिरते हैं घर-घर चिराग़ में॥

हर जलवा-गाह यार चमन हो कि बज़्म हो।
हर फूल में वह बू है ज़िया[5] हर चिराग़ में॥

परवाने ऐसे नशये-उल्फ़त से मस्त हैं।
क्या मय भरी है सूरते-साग़र चिराग़ में॥

* *

1. लाल रंग के फूल 2. चांद और सूरज 3. नितांत एकान्त 4. आवारा गर्द
5. रोशनी-प्रकाश

पस्तिये-बख़्त[1] से यह ख़ाक बराबर मैं हूँ।
साया बिस्तर नहीं साये का भी बिस्तर मैं हूँ॥

कोई कहता है बुरा कोई भला करता है।
बख़्त-मुनयम[2] हूँ कि मुफ़लिस का मुक़ददर मैं हूँ॥

रंज होता जो कोई मेरे बराबर होता है।
शुक्र करता हूँ कि हर-एक से क़मतर[3] मैं हूँ॥

बे-खुदी में भी मेरी रंग है नैरंगी[4] का।
कभी सहबा,[5] कभी मीना, कभी साग़र, मैं हूँ॥

मैं कहाँ रब्त[6] गुल-ओ-लाला कहाँ, मिस्ले-नसीम।
और गुलज़ार जहाँ में कोई दम भर मैं हूँ॥

जलवये-हुस्न पे उस शोख़ का कहता है "अमीर"।
बज्म में शमा हूँ गुलशन में गुले-तर[7] मैं हूँ॥

* *

1. दुर्भाग्य 2. अमीरों का भाग्य 3. नीचे 4. रंगबिरंगी 5. मदिरा 6. सम्बंध 7. भीगे हुए फूल

की जो कुछ इश्क़ ने कासीर[1] तमाशा होगा।
तेरी सूरत पे मेरी शक्ल का धोका होगा॥

बेसबब ज़लज़ला आलम में नहीं आता है।
कोई बेताब तहे-ख़ाक[2] तड़पता होगा॥

देख ऐ दर्द जुदा हो न दिले-महज़ूँ[3] से।
और उलझेगा यह बीमार जो तनहां होगा॥

गंज[4] क़ारूँ भी मिला मुझको जो ऐ हिर्स[5] तो क्या।
उम्रे-मुफ़लिस[6] की तरह सर्फ़े-तमन्ना[7] होगा॥

इश्क़ उसके लबे-शीरीं से मैं रखता हूँ "अमीर"।
दर्द भी होगा मेरे दिल में तो मीठा होगा॥

* *

1. प्रभाव 2. मिट्टी के नीचे 3. दुःखी हृदय 4. ख़ज़ाना 5. लालच 6. निर्धन का जीवन 7. इच्छाओं में समाप्त

किसी की रूह पे सदमा हो अश्कबार हूँ मैं।
किसी के दिल में उठे दर्द बेक़रार हूँ मैं॥

किसी का दिल नहीं दुखता मेरे तड़पने पर।
समझते हैं मुझे बिजली वह बेक़रार हूँ मैं॥

पड़ा है तफ़रूका[1] क्या इज्तराब[2] से पसे-मर्ग[3]।
सरे-मज़ार मेरा दिल तहे-मज़ार हूँ मैं॥

शिगुफ्तगी[4] में भी मेपी फ़सुर्दगी[5] है अयां।
शरारे-संगे-लहद[6] हूँ अगर शरार हूँ मैं॥

न मुहतसिब का मुझे ख़ौफ़, न साक़ी का।
गदाये-मैक़दा मुफ़लिस शराबख्वार हूँ मैं॥

फ़रिश्ते लेके चले थे मुझे जहन्नुम को।
तड़प के ख़िल्द[7] में पहुंचा वह बेकरार हूँ मैं॥

वह पीर हूँ कि जवानो का रंग रखता हूँ।
अज़ीज़ क्यों न हूँ बेफ़स्ल की बहार हूँ मैं॥

क़फ़न का पास न मुझको मज़ार का है लिहाज़।
बुरा तपिश का हो दोनों से शर्म सार हूँ मैं॥

* *

1. मतभेद 2. परेशानी 3. मरणोपरान्त 4. सुख 5, दुःख 6. क़ब्र के पत्थर की चिन्गारी 7. संसार

ठहरा गया कब तीर से ऐ तुर्क[1] मेरे दिल के पास।
खंज़र भी तड़पा देर तक आया जो मुझ बिसमिल के पास॥

गर्दिश जो हो तक़दीर में कुछ सई काम आती नहीं।
मंज़िल कुछ आगे बढ़ गई यह कौन है मंहमिल[2] के पास॥

कर तू ही रहम अब ऐ क़ज़ा तड़पे यह बेकस ताकुज़ा[3]।
क़ातिल ख़फ़ा खंजर खिंचा, कोई नहीं बिसमिल के पास।

इस कशमकश में नजअ[4] की तब तक रहूं हैं सख्त जां।
ऐ इज़तराबे -दिल[5] ज़रा तू दौड़ जा क़ातिल के पास॥

मैंने कहा बेकस हूँ मैं बोले हमें देते हो दम
हसरत हमारी है अभी बाक़ी तुम्हारे दिल के पास।

तीरे-निगाहें-नाज़ ने ताका कभी दिल को अगर।
जाने "अमीर" बातबां[6] पहुंची तड़प कर दिल के पास॥

* *

1. निष्ठुर 2. कजावा 3. कहां तक 4. मृत्यु 5. हृदय की बेचैनी 6. निर्बल

पुर्सिश[1] को मेरी कौन मेरे घर नहीं आता।
तैवर नहीं आते हैं कि चक्कर नहीं आता॥

क़ातिल हो के खिंचने की शिक़ायत नहीं हमदम।
ख़ंजर भी तो पहलू के बराबर नहीं आता॥

नाविक[2] की ख़ता है न कमांदर[3] की तक़सीर[4]।
ऐ तायरे-दिल[5] वक्त बराबर नहीं आता॥

कहते हैं यह अच्छी है तड़प दिल को तुम्हारे।
सीने से तड़प कर कभी बाहर नहीं आता॥

सुलझाते हैं वह ज़ुल्फ़ तो उलझाते हैं इक दिल।
फ़र्क़ इसमें कभी बाल बराबर नहीं आता॥

ग़ुर्बत क़दये-दहर[6] में सदमे से हैं सदमे।
इस पर भी कभी याद हमें घर नहीं आता॥

हम जिसकी हवस में हैं "अमीर" आपेसे बाहर।
वह पर्दा नशीं घर से बाहर नहीं आता॥

* *

1. पूछने वाला 2. तीर 3. तीर चलाने वाला 4. अपराधबोध 5. हृदय रूपी पंछी
6. संसारिक परदेस

कुछ तो सबब है गर्दिशे-लैलो निहार[1] का।
इस पर पड़ा है सब्र तबेक़रार का॥

फूलों का क़ाफ़िला है कि उतरी है यह बरात।
हर शाखे-गुल है पाँव उरूसे-बहार[2] का॥

दिलो-सोज़ बेकसी सा नहीं कोई बादे-मर्ग[3]।
परवाना हो गई मेरे शमा मज़ार का॥

साक़ी के हाथ से जो गिरा जाम कह उठा।
टूटा वह दिल कहीं किसी उम्मीदवार का॥

हमराह है जो हसरत-ओ-ईमां की भीड़-भाड़।
ताबूत[4] उठा "अमीर" ग़रीब उलदयार[5] का॥

* *

1. दिन-रात का चक्कर 2. दुल्हन दैसी वसन्त ऋतु 3. मरने के बाद 4. अर्थी 5. परदेसी

रोशनी नाम को भी ख़ानये-वीरां में नहीं।
हाय बिजली सी चमक भी शबे-हिज्रां में नहीं॥

बेकसी देर से चिल्लाती है दे कौन जवाब।
कह दे इबरत[1] ही कोई गोरे-गरेबां[2] में नहीं॥

ग़ुचें कहते हैं कि क्या जल्द गुज़रती है बहार।
मुस्करा लेने को फ़ुर्सत भी गुलिस्तां में नहीं॥

अपने मौका पे हर इक चीज़ भली लगती है।
कांटे उन फूलों से अच्छे, जो गरेबां में नहीं॥

पड़ गया तफ़रूक़ा[3] आते ही ख़िज़ां के ऐसा।
रंग फूलों में नहीं, फूल गुलिस्तां में नहीं॥

क़ाज़ी-ओ-मुहतसिब[4]-ओ-शेख़, सब आते हैं "अमीर"।
एक तौबा है कि वह सुहबते-रिंदां में[5] नहीं॥

* *

1. नसीहत 2. परदेसियों की क़ब्र 3. मतभेद 4. पवित्रवर शराबियों की संगत

आरिज़ तेरे अय गुल बदन इक इस तरफ एक उस तरफ़।
गोया खिलें हैं दो चमन इक इस तरफ़ एक उस तरफ़॥

मुरदा जो है ज़ेरे-ज़मीं ज़िंदा है बालाये-ज़मीं[1]।
आरास्ता[2] है अन्जुमन इक इस तरफ़ एक उस तरफ़॥

पारी में अय जाहिद नहीं यह तेरे गेसुये-सफ़ेद।
हैं दोश[3] पर यह दो क़फ़न इक इस तरफ़ एक उस तरफ़॥

इफ़लास-ओ-दौलत[4] दोनों से दुनियां में होता है ज़रर[5]।
इस सांप के हैं दो दहन इक इस तरफ़ इक उस तरफ़॥

ख़ाली मुसीबत से नहीं इन्सान को हस्ती अदम।
हैं मंजिले दोनों कठिन इक इस तरफ़ इक उस तरफ़॥

जुल्फ़ें "अमीर" उस हूर की हैं चेहरये-पुर-नूर पर।
इक चांद है और दो गहन इक इस तरफ़ इक उस तरफ़॥

* *

1. पृथ्वी के ऊपर 2. सजी हुई 3. कांधा 4. ग़रीबी और धन 5. हानि

शक्ले-आईना[1] जो हैरत होगी।
देख लेने की तो सूरत होगी॥

लोग कहते हैं कि बिजली चमकी।
मेरी आंहों की शरारत होगी॥

दौड़ साक़ी की तेरे मस्तों को।
होश आया तो क़यामत होगी॥

कब तक ऐ शेख़ हसीनों से गुरेज़[2]।
यही हूरों की भी सूरत होगी॥

वह तो होने के नहीं गर्म ख़राम[3]।
कौन कहता है क़यामत होगी॥

आईना देखने दो उनको "अमीर"।
देखना और ही सूरत होगी॥

* *

1. आरसी की तरह 2. नफ़रत 3. चाल की मस्ती

वही चिराग वही गुल वही क़मर वही बर्क़।
नये लिबास में देखा उसे जहाँ देखा॥

फ़ना[1] है हुस्न को दैलत को ज़िन्दगानी को।
जहां में न कोई बाग़। बे-ख़िजां[2] देखा॥

फँसी जो दाम में बुलबुल तो किन निगाहों से।
कभी चमन को, कभी सूये-आशियां[3] देखा॥

तेरे बिसाल की फुर्कत में हमको याद आई।
लुटा हुआ जो कहीं कोई कारवां देखा॥

दिखाई तर्क़े-ताल्लुक़[4] ने शान बेरंगी।
बढ़े मकान से आगे तो लामकां देखा॥

* *

1. मिट जाना 2. पतझड़ के बिना बाग़ 3. घौंसले की ओर 4. सम्बंध विच्छे-

मुहं पे कह देगें हम क़यामत में।
हैं यह फ़ितने किसी को क़ामत[1] के॥

हिज्र की एक शब ने दिखलाये।
सैकड़ों दिन मुझे क़यामत के॥

क्या कहा कोहकन[2] से शीरी[3] ने।
भाग साये से बे-मुरव्वत[4] के॥

दिल मेरा और आरज़ू तेरी।
जान सदके हो ऐसी हसरत के॥

हो गये सुर्ख़ होटं बातों में।
वाह क्या रंग हैं नज़ाकत के॥

वस्ल क्योंकर हो दोनों क़ैदी हैं।
हम नक़ाहत[5] के वह नज़ाक़त के॥

* *

1. क़द 2. फ़रहाद नामक प्रेमी 3. मिठास, एक प्रेमिका का नाम 4. बेशर्म
5. इच्छा

वह बेकस हूँ नहीं है कोई मेरे ग़म गुसारों में।
फ़क़त इक दिल है तो वह भी तुम्हारे जां निकसारों में॥

हक़ीक़त आशिकों के मर्ग[1] की हमसे कोई पूछे।
बहुत जब नींद आयी सो रहे जाकर मज़ारों में॥

निगाहें-यार क्या बदली जहां बदला, हवा बदली।
वह दुश्मन जां के हैं थे जो आगे जां निसारों में॥

उड़ा पारा जला स्पंद[2] दब कर रह गई बिजली।
हमीं साबित क़दम ठहरे तुम्हारे बे क़रारों में॥

फ़रिश्तों से कहो इतनी क़यामत में ख़बर रखें।
कहीं छुप छुप के ज़ाहिद[3] मिल न जाये बादा-ख्वारों[4] में॥

जुदा हैं दुख्ते-रज़[5] का नाम हर सुहबत में ऐ साक़ी।
परी है मयकशों में, हूर है परहेज़गारों में॥

बहुत से जलवागाहे यार में दिदार के तालिब।
कलीम अल्लाह[6] आगे बढ़ गये उम्मीदवारों में॥

खुदा जाने कहां दिल जान किस जलसे में है अपनी।
बज़ाहिर बुत बने बैठे हैं हम हर चन्द यारों में॥

* *

1. मृत्यु 2. घोड़ा 3. परहेज़ करने वाले 4. शराबी 5. अंगूर की बेटी, मदिरा 6. एक व्यक्ति विशेष का नाम

दिल अब्रू पर फिदा हो मुफ्त का इल्जाम दिलबर पर।
गला शमशीर[1] काटे .ख़ून हो जल्लाद के सर पर॥

ख़राबे-इश्क़ लाखों ताक में हैं चश्मे-साक़ी की।
ज़माने के शराबी आगिरे हैं एक साग़र पर॥

दिले-बेताब आशिक़ जाके ठहरा कूये-क़ातिल[2] में।
सिपाही ने कमर खोली पहुंच कर अपने बिस्तर पर॥

नहीं यह गर्मिये-मय से लबे-जाना[3] पे बुतख़ाने।
लुट कर रख दिये काक़ी ने साग़र हौज़े-कौसर[4] पर॥

"अमीर" अब दूसरे को इस जहां में क्या तवक्को[5] हो।
बिरादर को न आया रहम यूसुफ़ से बिरादर पर॥

* *

1. तलवार 2. प्रिय की गली 3. प्रिय के होंठ 4. स्वर्ग का तालाब 5. आशा

जब हुआ वादा और वफ़ा न हुआ।
हो गया एक सब हुआ न हुआ॥

हाय बेदर्द क्या मज़ा होता।
तेरे पहलू में दिल मेरा न हुंआ॥

ख़ामुशी में भी क्या हलावत[1] है।
गो कभी लब जुदा न हुआ॥

तीस दिन मय पिलाई साक़ी ने।
एक रोज़ा मेरा क़ज़ा[2] न हुआ॥

पुतलियां भी बदल गईं दमें-नज़अ[3]।
वक्त पर कोई आशना न हुआ॥

मुझको दर्द आशना किया लेकिन।
दर्द ख़ुद दर्द आशना न हुआ॥

सूरते-लाला[4] इस चमन में "अमीर"।
दाग़ दिल से मेरे जुदा न हुआ॥

* *

1. मिठास 2. मृत्यु 3. मरते समय 4. फूल की भांति

शाने हक़[1] साफ़ बुतों के रूख़े-गुलफ़ाम[2] में है।
ख़िलवते-ख़ास का जलवा गहे-आम में है॥

है वही वलवला पीरी में जवानी में जो था।
एक ही रंग हमारी सहर-ओ-शाम में है॥

कभी ख़िलवत में निहां है कभी ज़िलवत[3] में अयां।
दुख़्तरे-रज़ कभी बोततल में कभी जाम में है॥

रूह क़ालिब[4] में है जकड़ा है रगों में क़ालिब।
मैं गिरफ्तार-क़फ़स में हूँ कफ़स दाम में है॥

रोज़ की वादा-ख़िलाफ़ी से तेरा वादा भी।
रात-दिन मेरी तरह गर्दिशे-अय्याम में है॥

* *

1. ईश्वरीयेच्छा 2. फूलों जैसे चेहरे 3. भीड़ में 4. शरीर

कहता है कौन आह में अपने असर नहीं।
हाँ दिल दुखे किसी का यह मद्दे-नज़र[1] नहीं॥

आहे-शरर-फ़शां[2] में हमारे असर नहीं।
फूला हुआ दरख़्त है लेकिन समर नहीं॥

ऐसे हैं मस्त बादये-हुस्न-ओ-जमाल से।
मेरी ख़बर कहाँ उन्हे अपनी ख़बर नहीं॥

हम बेक़रार लौटते हैं कब से ख़ाक पर।
आसूदगाने-ख़ाक[3] तुम्हें कुछ ख़बर नहीं॥

महफ़िल में शमा बाग़ में शबनम फ़लक पे अब्र।
किसकी है आंख जो मेरे मातम में तर नहीं॥

शेख़े-हरम हरम में ब्रहमन है देर में।
हम किस जगह हैं कुछ हमें अपनी ख़बर नहीं॥

दुनियां है तुरफ़ा[4] मयकदये-बेख़ुदी "अमीर"।
सब मस्त हैं किसी को किसी की ख़बर नहीं॥

* *

1. अभिप्राय 2. चिन्गारी उग़लने वाली आह 3. कब्र में आराम से पड़े रहना 4. पूरी तरह

पड़ गई क्या लूट यारब गुलशने-ईजाद[1] में।
दस्ते-गुलचीं[2] में है गुल बुलबुल कफ़े-सय्याद[3] में॥

बाल-ओ-पर अपने कहां इस गुलशने-ईजाद में।
रह गये कुछ दाम में कुछ खानयें-सैय्याद में॥

हो गई कुछ आकर ख़ानये-सैय्याद[4] में।
यह मज़ा आगे न था बुलबुल तेरी फ़रियाद में॥

पर मेरे टूटे हुये उड़ जायं सब सूये-चमन[5]।
ऐसी आंधी आये यारब खानये-सैय्याद में॥

फ़िल-हक़ीक़त[6] दिल को दिल से राहत होती है "अमीर"।
हम है उनकी याद में वह हैं हमारी याद में॥

* *

1. नया-नया बगीचा 2. फूल तौड़ने वालो के हाथ 3. शिकारी की हथेली
4. शिकारी का घर 5. बाग़ की ओर 6. वास्तव में

कुछ चुने हुए अशआर

खुदा-खुदा जो करे और खुदी[1] का दम भी भरे,
बड़ा फ़रेबी है, झूठा है, वह खुदाई[2] का।

आज़मा देखा उसे सौ बार हमने ऐ "अमीर",
आशना से आशना, बेगाने से बेगाना था।

बरसों से तड़पता हूँ मैं बिस्मिल[3] नहीं होता,
इतना सा मेरा काम भी क़ातिल नहीं होत।

मैं ज़बां से तुमको सच्चा, कहो, लाख बार कह दूं,
इसे क्या करूं कि दिल को, नहीं एतबार होता।

हिलती नहीं हवा से चमन में यह डालियां,
मुहं चूमते हैं फूल उरूसे-बहार[4] का।

मैंने छाती से लगा कर, रक्खा जिसको उम्र भर,
हाय, वो नाज़ों का पाला, दिल मेरा जाता रहा।

* *

1. घमण्ड 2. संसार भर का 3. घायल 4.बाहरों की दुल्हन

एक झौंके में है इधर से उधर,
चार दिन की बहार है दुनिया।

हम वह मैकश हैं कि है अपनी निगाहों में असर,
सर के बल दौड़ते शीशे[1], जो इशारा होता।

मुहं पे क़ाज़ी के मैं कह दूगां कि हूँ हुस्न-परस्त,
इश्क़ कुछ कुफ़्र[2] नहीं है कि जता भी नाकूं।

मस्त आलम को करती है वह आंख,
मय-फ़रोशी की वह दुकान न हो।

शर्मो-शोख़ी, दोनों ग्राहक हैं इलाही, क्या करूं,
के जिसे-बेहक़ीक़त[3], दो ख़रीदारों में हूं।

क़त्ल करते हो दिखा कर जो अदाएं मुझको,
पहले ले लेने दो जी भर के बलांए मुझको।

उठता नहीं है अब तो क़दम मुझ ग़रीब का,
मन्ज़िल से कह दो दौड़ के ले मुझको राह में।

बुत भी क्या चीज़ हैं अल्लाह सलामत रक्खे,
गालियां दे के ग़रीबों को, दुआ लेते हैं।

* *

1. मदिरा पान 2. पाप 3. तुच्छ वस्तु

शमीमे-गुल[1] हैं हम भी, तुम अगर बादे-बहारां[2] हो,
जिधर चलते है, चलते है, जहां ठहरो, ठहरते हैं।

क्या मज़ा देता है उस शोख़ का कहना शबे-वस्ल,
अब न छेड़ो, न सताओ, हमें नीन्द आई है।

शोरे-हू-हक़[3] हैं चहां, बढ़ के वहां से ज़ाहिद,
अपनी मस्जिद से लड़ा ले मेरे मैख़ाने को।

और पर्दे नहीं होते शबे-वस्ल तो क्या,
बीच में सर्म की चिलमन तो पड़ी रहती है।

बेखुदी से हमें ये हाल न ता ज़स्त खुला,
एक आलम में रहे हम कि दो आलम में रहे।

एक की एक को होगी न ख़बर महशर[4] में,
लेगी जो सब की ख़बर, वह तेरी रहमत होगी।

मेरे घर क्या है, शबे-हिज्र जो रोज़ आती है,
यह बला जा के किसी गेसुए-पुख़म[5] में रहे।

मेरी तपिश से, मेरे दिल की बेक़रारी से,।
तमाम ख़ल्क है वाक़िफ़, तुम्हें ख़बर न सही॥

* *

1. पुष्पगंध 2. वसन्त-सकगीर 3. विचित्र आवाज़े4. प्रलयावसर 5. घुंघराले बाल

रही आरज़ू कि दो-दे, तेरे साथ तीर चलते,
कोई दिल को प्यार करता, कोई दिल के पार होता।

ज़ीस्त[1] का एतबार क्या है "अमीर",
आदमी बुलबुला है पानी का।

तड़प के मुहं से कलेजा निकल पड़े न "अमीर",
बहुत जो दर्द उठे, दिल पे हाथ धर लेना।

एक अरमान निकलता है तो सौ आते हैं,
दिल अजब घर है कि हरगिज़ नहीं वीरां होता।

पसे-मर्ग[2] मिट्टी भी उसने न दी,
अमीर आबरू[3] मुफ्त खोया किया।

गर्द उड़ी आशिक़ की तुरबत[4] से तो झुंझला बार कहा,
वाह, सर चढ़ने लगी पांव की ठुकराई हुई।

झाड़ती है कौन से गुल की नज़र,
बुलबुले फिरती हैं क्यूं तिनके लिए।

यहां तो जान भी है, दिल भी है, जिगर भी है,
तेरी निगाह में कुछ जज्ब का असर भी है।

* *

1. जीवन 2. मरणोपरान्त 3. प्रतिष्ठा 4. क़ब्र

बरख़िलाफ़[1] ऐसी हक बाग़े-जहां की है "अमीर"।
फूल को हाथ लगाता तो शरारा होता॥

न आऐं फ़ुरक़त में तारे नज़र,
ग़रीबों से आंखें चुराएगी रात।

इश्क़ बाज़ी का अगर हौसला रखना है "अमीर",
दिल जो लोहे का तो पत्थर का जिगिर पैदा कर।

शिकवे तू शौक़ से कर वस्ल में लेकिन ऐ दिल,
बात कुछ ऐसी न बिगड़े कि नबा भी न सकूं।

ईलाही उन्हें रास आये यह ज़ीनत,
लहू में हमारे हिना मिल रही है।

ऐ तेग़े-नाज़[2] हाथ जो तूने उठा लिया,
लेता नहीं कोई मुझे अपनी पनाह में।

किसी से खोट नहीं मेरे दिल में, दोस्त तो क्या,।
अदू[3] भी यार बनाए मुझे, तो यार हूं मैं॥

दिल में तुम, आंख में तुम, काबे में तुम, दैर में तुम।
तुम जहां चाहो-छचिपो, हम तुम्हे पहचान गए॥

* *

1. विरूद्ध 2. प्रिय की आदाओं की छुरी 3. दुश्मन

ये अपने दाग़ है, दिन-रात जिनका एक आलम है,
सितारे डूबते हैं दिन को, रातों को उभरते हैं।

घड़ियों रोये हैं हम "अमीर" लहू,
ज़ख्म कोई जो मुस्कुराया है।

वह बादाकश[1] हैं, क़दम जम गए "अमीर" वहीं,
जो मच-फ़रोश[2] की हमको नज़र दुकां आई।

ऐ हमसफ़ीर[3] उड़ न सका जब मैं ज़ौफ़ से,
उड़-उड़ के सूये-बाग़[4] मेरे पर चले गए।

खून हो तालिबे-दीदार का या दम उलटे,
वह तो परदा नहीं चेहरे से उलटने वाले।

जवानी ले गई साथ अपने सारा ऐश मस्ती का,
सुराही है न शीशा है, न साग़र है, न मस्ती है।

की मैंने लजाई हुई चितवन की जो तारिफ़,
आंखों ने कहा झुक के हया और ही कुछ है।

और जीता मैं तो करते और तुम ज़ौरो-सितमै,
मेरे अरमां, हौसले बाक़ी तुम्हारे रह गए।

* *

1. शराबी 2. मदिरा-विक्रेता 3. साथी बन्दी 4. बाग़ की ओर

वे सर से पांव तक तस्वीर हैं, बेसाख़्तापन[1] की,
संवरने से बिगड़ते हैं बिगड़ते से सवंरते हैं।

नहीं बचता दिले-पुरदाग़ तेरी ज़ुल्फ़े-पेचां से,
यह वह नागिन है जो ताऊस को उड़-उंड़ के डसती है।

आज कुछ और भी पी लूं कि सुना है मैंने,
आते हैं हज़रते वाईज़[2] मेरे समझाने को।

नक़्श बैठा है मेरा, कूचाए-जानां में "अमीर",
क्या निगहबानों में ताक़त कि उठाएं मुझको।

कब तक बग़ल में पाले हुए दिल को रोइए,
ख़ाली यूं ही हज़ारों के आग़ोश हो गए।

तज़किरा[3] कुछ तो किया मेरी परेशानी का,
आज उलझे वह बहुत, ज़ुल्फ़ की सरगोशी[4] से।

* *

1. जिसमें कोई बनावट न हो 2. धर्मोंपदेशक 3. समीक्षा, बहस 4. खुसुर-फुसुर